MAHILA SAMAKHYA SOCIETY (KARNATAKA)

BANGALORE

Registration No.728/88-89, Bangalore District.

Annual Report : 1990-91

Ms. Srilatha Batliwala
State Programme Director
Mahila Samakhya Society, Karnataka

Office:
276, Second Cross,
Cambridge Lay-out,
Bangalore - 560008.

महिला समाख्या सोसायटी (कर्नाटक)

बंगलौर

पंजीकरण सं. 728/88-89 बंगलौर दि. 4.2.89

वार्षिक रिपोर्ट: 1990-91

सुश्री श्रीलता वाट्लीवाला

राज्य कार्यक्रम निदेशक

महिला समाख्या सोसायटी, कर्नाटक

कार्यालय: 276, सेकेंड क्रास, कैंब्रिज

लैआउट, बंगलौर - 560008.

C O N T E N T S

Sl.No.	Particulars	Page
1.	List of the General Council Members	1
2.	List of the Executive Committee Members	4
3.	Report of activities of the State Programme Office	6
4.	Bidar District Report	15
5.	Bijapur District Report	20
6.	Mysore District Report	25
7.	Audited Statement of Accounts	

GENERAL COUNCIL MEMBERS 1990-91

	Name/Designation/Address	Status of Membership
1.	Shri. Veerappa Moily, Hon'ble Minister for Education, Government of Karnataka, Bangalore.	President
2.	Shri. C.T. Benjamin, Commissioner and Secretary I, Department of Education, Government of Karnataka, Bangalore.	Chairman
3.	Smt. Srilatha Batliwala, State Programme Director, Mahila Samakhya Karnataka, Bangalore.	Member-Secretary
4.	Smt. Meera Saksena, Director, Women and Child Welfare Department, Government of Karnataka, Bangalore.	Member
5.	Shri. M. Madangopal, Director, Mass Education, Government of Karnataka, Bangalore.	Member
6.	Director, Social Welfare Department, Government of Karnataka, Bangalore.	Member
7.	The Director, Department of Rural Development, Government of Karnataka, Bangalore.	Member
8.	The Director, Primary and Secondary Education, Government of Karnataka, Bangalore.	Member
9.	Director, State Resource Centre, Government of Karnataka, Bangalore.	Member

महिला समाख्या सोसाइटी (कर्नाटक)
वर्ष 1990-91 के कार्यकलापों की रिपोर्ट

बीदर जिले की रिपोर्ट

बीदर की मुख्य विशेषता यहां एक विशाल जिले का होना है और अब ------ बीदर जिले के 4 तालुकों में फैले क्षेत्र में 11 महिला संघ उस क्षेत्र में क्रांति ला रही है । जिनका प्रारंभिक कार्य गावों में स्थापित होकर महिलाओं को शक्ति प्रदान करने और सामुदायिक विकास, बाल शिक्षण आदि जैसे मुद्दों पर केंन्द्रित होना है । इन संघों में महिलायें लगातार एक संघ, उनके लक्ष्यों और संघ के स्वरूप के विषय में विचार करती रही है। सहयोगिनियोंऔर सखियाँ संघ के प्रति महिलाओं के दृष्टिकोण को बदलने और यह विश्वास दिलाने का प्रयास कर रही है कि ये मात्र कर्ज या आर्थिक लाभ प्राप्त करने का साधन ही नही है बल्कि सामूहिक प्रयासों के माध्यम से आत्म विश्वास से पूर्ण जीवन जीने के नए तरीकों की खोज करने की दिशा में संघ महिलाओं के लिए सहायता स्थल है इस प्रक्रिया को सुकरबनाने के लिए "भूमिकाओं" बैठकों सरकारी कार्यालयों बैंकों आदि के दौरों अध्ययन कार्यशालाओं और विचार विमर्शों का प्रभावपूर्ण प्रयोग किया जा रहा है

महिला मुक्ति मेला

यह मेला समाख्या द्वारा प्रारंभ किया गया अब तक का सबसे बड़ा अभ्यास था । और हमें इस बात का गर्व हुआ कि बीदर को मेले के स्थल के रूप में चुना गया तथापि, इसे सफल बनाने के लिए हमारी टीम की जिम्मेदारियां काफी बढ़ गई थी । फलत: इसकी योजना बनाने पर काफी ध्यान दिया गया जिसके लिए दिसम्बर और जनवरी में दो बड़ी बैठकें आयोजित की गई ।

...../=

10.	Chairman, State Social Welfare Advisory Board, Government of Karnataka, Bangalore.	Member
11.	Ms. C.S Vedamanie, District Programme Coordinator, Mahila Samakhya Karnataka, Bidar.	Member
12.	Ms. Nirmala Shiraguppi, District Programme Coordinator, Mahila Samakhya Karnataka, Bijapur.	Member
13.	Ms. Vani Umashanker, District Programme Coordinator, Mahila Samakhya Karnataka, Mysore.	Member
14.	Dr. Sunder Raju S.D., Navajeevan Sneha Clinic, Bidar.	Representative, Bidar District Resource Group.
15.	Ms. Rukmini Rao, Bidar District Resource Group, Mahila Samakhya Karnataka, Bidar.	Representative, Bidar District, Resource Group.
16.	Shri. N.B. Joshi, Yuvaka Vikas Kendra, Bijapur.	Representative, Bijapur District Resource Group.
17.	Shri. S. Bankapur, Sharada Vidhya Samsthe, Guledgudda Taluk, Bijapur District.	Representative, Bijapur District Resource Group.
18.	Ms. Lalitha Karambaih, DEED, H.D. Kote Road, Hunsur, Mysore District.	Representative, Mysore District Resource Group.
19.	Ms. Tara, MYRADA Project, H.D. Kote Road, Mysore.	Representative, Mysore District Resource Group.
20.	Dr. Prabha Mahale, Reader, Karnatak University, Dharwad.	Member
21.	Smt. Amukta Mahapatra, Principal, ABACUS Montessori School, Madras.	Member

हमने बीदर तालुक के मरकुंडा गांव को मेले के स्थल के रूप में चुना क्योंकि वहां गांव से सटी काफी समतल जमीन थी और ग्राम मंडल का प्रधान से बीदर जिला संसाधन दल का सदस्य होने के नाते हर संभव सहायता और सहयोग की उम्मीद थी ।

योजना बनाने वाली बैठकों में, मेला आयोजित करने के प्रत्येक पहलू पर विस्तार से चर्चा हुई और विशिष्ट जिम्मेदारियां निभाने के लिए समितियों का गठन किया गया । इस तथ्य के बावजूद कि बीजापुर मैसूर और महाराष्ट्र के कुछ दल काफी सुबह पहुंचे, कुछ लगभग 30 घंटों की यात्रा करके पहुंचे, उद्घाटन समारोह केवल एक घंटा विलम्ब से शुरू हुआ । केंद्रीय शामियाने में एकत्रित, प्रसन्नचित्त और त्रिदिवसीय विलाप और विचार विमर्श प्रारंभ करने के लिए तैयार 1500 महिलाओं का दृश्य काफी प्रभावशाली था ।

उद्घाटन के तुरंत बाद विधि स्वास्थ्य और आर्थिक कार्यक्रमों के सम्बन्ध में आयोजित बैठकों में भाग लेने के लिए महिलायें अनुशासित रूप से अपने निर्धारित शामियानों में गईं । विभिन्न बैठकों के लिए सहभागियों को जिस प्रकार विभाजित किया जाए कि वे तीन दिनों में सूचनाओं से अवगत हो सकें, इसकी योजना बनाने में काफी समय लग गया सहयोगिनियों को अपने दल की बैठकों के लिएसही इस प्रकार शामियाने में ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी गई । जिले भर में महिलाये अपने संघ की बैठको में महिति मेलों के बारे में चर्चा करती रहीं और अपने अनुभवों का आदान प्रदान करती रहीं । अनेक गावों के तघों की महिलाओं ने लघु बचत कार्यक्रम प्रारंभ किया है और बैंक में खाते खोले हैं । जडी-बूटियों से इलाज के विषय में भी व्यापक चर्चा हो रही है ।

22.	Smt. Vimala Ramachandran National Project Director, Mahila Samakhya, New Delhi.	Representative Ministry of HRD
23.	Shri. R.S. Dua, Assistant Financial Advisor, Integrated Finance Division, Department of Education, Ministry of HRD, New Delhi.	Representative Ministry of HRD
24.	Shri. Amitabh Mukhopadhyay, Under Secretary (VA) Department of Education, Ministry of HRD, New Delhi.	Representative Ministry of HRD
25.	Dr. Veena Shatrugna, Senior Research Officer, National Institute of Nutrition, Hyderabad.	Nominee of the National Resource Group.
26.	Ms. Corrine Kumar, CIEDS, Indiranagar, Bangalore.	Nominee of the National Resource Group.
27.	Ms. Nandana Reddy, Executive Director, Concerned for Working Children, Domlur, Bangalore.	Nominee of the National Resource Group.
28.	Dr. Vijay Padaki, J.P. Nagar, Bangalore.	Nominee of Govt. of India
29.	Smt. Vasantha Kannabiran, East Nehru Nagar, Hyderabad.	Nominee of Govt. of India
30.	Dr. Vinod Vyasulu, Institute for Social and Economic Changes, Nagarbhavi, Bangalore.	Nominee of Govt. of India
31.	Dr. Gita Sen, Centre for Development Studies, Prasanta Hill, Trivandrum.	Nominee of Govt. of India
32.	Smt. Philis Das, Regional Director, NIPCCD, Jayanagar, Bangalore.	Nominee of Govt. of India

संघ के कार्यकलाप

1. साक्षरता : यह मुख्य शिक्षण प्रक्रिया बनी हुई है जो सभी संघों में नियमित रूप से और सक्रियता पूर्वक अपनाई जा रही है । अधिकाधिक महिलायें इस कन्नड कहावत से प्रभावित हो रही है कि "अंगूठें का निशान अपने पीछे एक कड़वी भावना छोड़ता है" महिलायें इस तथ्य को बार बार दोहरा रही है कि वर्णमाला पढ़ना हो या पत्र लिखना हो, साक्षारता का उनके जीवन में अत्यधिक महत्व है । प्रारंभिक 12 गावों के अतिरिक्त अन्य अने॰ संघों में उन गावों की साक्षर महिलाये और बच्चे द्वारा सप्ताह में दो बार साक्षरता कक्षाएँ चलाई जाती हैं ।

उन गावों में में भी साक्षरता के लिए रूचि जारी रही जिन्हें हाल ही में इस कार्यक्रम में शामिल किया गया है । ऐसे क्षेत्रों में महिलायें यही चर्चा कर रहीं हैं कि वे कहां एकत्रित हों, स्वयं को पढ़ाने के लिए किनसे संपर्क करें । बिजली आदि का प्रबंध कैसे किया जा सकता है । कुछ गावों में महिलाओं ने अपने स्कूल जाने वाले बच्चों से स्वयं उनको पढ़ाने के लिए कहा है । कुछ गावों में सहयोगिनियों ने साप्ताहिक दौरे के दौरान साक्षारता के लिए निर्धारित । घंटे को दर किनार रखकर शिक्षक की भूमिका अपना ली है ।

संघ का पंजीकरण :- चूंकि महिला समाख्या, कर्नाटक का दीर्घकालिक लक्ष्य महिला संघों को स्वतंत्र बनाना और उन्हें अपना संघ बनाने में मदद देना है, हमने निश्चय किया है कि यदि एक बार प्रत्येक संघ सुदृढ़ सामूहिक कार्यकलाप की सीमा तक पहुच जाएं तो उन्हें पंजीकृत होने में मदद दी जानी चाहिए । इससे उन्हें हम लोगों के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी

...../=

EXECUTIVE COMMITTEE MEMBERS DURING 1990-91

	Name/Designation/Address	Status of Membership
1.	Shri. C.T. Benjamin, Commissioner and Secretay I, Department of Education, Government of Karnataka, Bangalore.	Chairman
2.	Smt. Srilatha Batliwala, State Programme Director, Mahila Samakhya Karnataka, Bangalore.	Member-Secretary
3.	Smt. Meera Saksena, Director, Women and Child Welfare Department, Government of Karnataka,	Member
4.	Shri. M. Madangopal, Director, Mass Education, Government of Karnataka, Bangalore.	Member
5.	Shri. P. S. Nagarajan, Finance Secretary II, Finance Department, Government of Karnataka, Bangalore.	Member
6.	Smt. Shobha Nambison, Director, Census Operation in Karnataka, Government of Karnataka, Bangalore.	Member
7.	Ms. Vimala Ramachandran, National Project Director, Mahila Samakhya Society, New Delhi.	Representative Ministry of HRD
8.	Shri. R.S. Dua, Assistant Financial Adviser, Integrated Finance Divison, Department of Education, Ministry of HRD, New Delhi.	Representative Ministry of HRD
9.	Ms. C. S. Vedamanie, District Programme Coordinator, Mahila Samakhya Karnataka, Bidar.	Member

अनुदान प्राप्त करने में सुविधा होगी । इस प्रकार संघ का पंजीकरण एक यांत्रिक प्रक्रिया न होकर एक ऐसी दीर्घकालिक नीति है जिसके द्वारा ग्राम समूहों को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनने में मदद दी जाती है ।

संघ-कूटी निमार्ण : संघ-कुटियों के निमार्ण के भूमि प्राप्त करने के लिए संघर्ष चल रहा है जो एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है । कुछ गावों में मंडल ने भूमि देना स्वीकार किया परंतु दी गई भूमि इतनी निम्न कोटि की थी कि उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया । उसके बाद मंडल ने विकल्प स्वरूप कोई और भूमि देने से इनकार कर दिया । कुछ स्थानों पर महिलायें शिशु सदनों के लिए साथ ही साथ सटे भूखंडों की मांग कर रही है । तीन गावों में संघों के भवननिमार्णाधीन हैं और महिलायें स्वयं इसके निमार्ण में संलग्न हैं तथा जल्द से जल्द पूरा करना चाहती हैं ।

संघ खाते:- समाख्या के नियमों के अनुसार संघ तब तक मानदेय नहीं प्राप्त कर सकते जब तक वे हस्ताक्षरकर्ता नियुक्त न करें और बैंक खाता परिचालित न करें जिसके लिए सभी सहायता दी जाती है । संघों के पंजीकरण से पहले यह आवश्यक पूर्व-शर्त भी है मार्च केअंत तक 34 संघों ने अपने खाते खोले थे और वर्ष 1990-91 के लिए 400/- रूपये प्रतिमाह की दर से मानदेय प्राप्त किया ।

संघ सम्बंधी विचार विमर्श:- अनेक लोगों में यह जागरूकता बढ़ी है कि संघों में अधिक से अधिक मुसलमान महिलाओं को शामिल किया जाए । पुतलीबाई और इमाम्बी इस दिशा में विशेष प्रयास कर रही हैं । अन्य

...../=

10.	Ms. Nirmala Shiraguppi, District Programme Coordinator, Mahila Samakhya Karnataka, Bijapur.	Member
11.	Ms. Vani Umashanker, District Programme Coordinator, Mahila Samakhya Karnataka, Mysore.	Member
12.	Dr. Veena Shatrugna, Senior Research Officer, National Institute of Nutrition, Hderabad.	Nominee of National Resource Group
13.	Ms. Corrine Kumar, CIEDS, Indiranagar, Bangalore.	Nominee of National Resource Group
14.	Shri. Madhav Rao, Commissioner, Bharath Scouts and Guides, Bidar.	Representative District Resource Group
15.	Shri. N.B. Joshi, Yuvaka Vikas Kendra, Bijapur.	Representative, District Resource Group.
16.	Smt. Shailaja DWCRA, Zilla Parishad, Mysore.	Representative, District Resource Group.

अनेक गांवों में इस बात पर विचार-विमर्श चल रहा है कि सभी समुदायों और जातियों की निर्धन महिलाओं को उनके संघों में शामिल किया जाय। एक गांव में संघ की महिलायें साम्प्रदायिक आधार पर विभाजित हैं। हरिजन और इसाई महिलायें पृथक संघों की मांग कर रही है। सहयोगिनी चंद्रकला जिसने अनेक तटस्थ स्थलों का सुझाव दिया है, के अथक प्रयासों के बावजूद इन महिलाओं के दोनों दल अपने निर्णय पर अटल हैं। इस समस्या के समाधान के लिए विशेष कार्यनीति अपनानी होगी।

विधिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दों पर भी बैठकों में नियमित रूप से चर्चा की जाती है और नई सूचनायें प्राप्त करने में महिलायें काफी रूचि ले रही हैं चाहे वे सरकारी कानून हो, रोग प्रतिरक्षण सामान्य बीमारियों के लिए एहतियाती उपाय हों, लघु बचत या सरकारी संसाधन प्राप्त करने के तरीके हों।

सरकारी कर्मचारियों/विभागों से तालमेल

संघ की महिलाओं ने सहयोगिनियों के साथ विभिन्न सरकारी संघ कार्यालयों में जाना जारी रखा ताकि वे सरकारी कर्मचारियों से मिलकर उनसे विभिन्न मुद्दों पर चर्चा कर सकें। ये महिलायें विधवा/वृद्धावस्था/विकलांग पेंशन जैसी सहायता प्राप्त करने, छोटे पैलों और स्ट्रीट लाइटों की मरम्मत करवाने के लिए सम्बन्धित कर्मचारियों और पदाधिकारियों से वार्ता करने में धीरे-धीरे अभ्यस्त होती जा रही हैं। वे यह जानने और समझने का प्रयास कर रही हैं कि किन परिस्थितियों में आपराधिक मामला दर्ज किया जा सकता है। अपने व्यावहारिक क्षेत्रीय दौरों और विभिन्न लोगों से आमने सामने संवाद करके वे कर्ज मंजूर करवाने और राशन कार्ड बनवाने आदि जैसे कार्यों में सफल हुई हैं। इस

......./=

REPORT OF ACTIVITIES FOR 1990-91

An Overview of the State Programme Office:

This period witnessed intensive and focussed training inputs by the State Programme Office. A broad range of tasks spanning administration, training, evaluation, planning and networking with other organisations were undertaken during this pace.

1. A workshop on Roles and Responsibilities was organised by the State Programme Office for members of the State and District team in June, 1990. The workshop was aimed at (a) increasing clarity about one's role in the programme, (b) greater understanding of others role and (c) resolving conflicts. A unique feature of the workshop was its integrated design, with participants drawn from all levels of the hierarchy, including the director, district coordinators, resource persons and sahayoginis. The group strongly felt that the workshop was a major turning point. It was also decided that similar exercises would be undertaken in all the districts.

2. The State Programme Office has constantly served as a link between the districts and sources of information. When the tribal women of Kuttuwadi Mahila Sangha in Hunsur Taluk of Mysore District faced a vicious attack by some non-tribal goondas in retaliation for their land struggle, the State Office mobilised legal assistance from the National Law School of India University and enabled the sangha to file a case in the High Court of Karnataka.

3. In August, a workshop on "Feminist Perspectives on Law and Legal Systems" was organised by Ms. Ratna Kapur, Advocate, Delhi High Court. This workshop enabled the group to re-examine the legal system from a feminist perspective and also familiarised the group with some key legislations, such as the forest law, marriage and divorce law, the rape law, etc.

4. In September, 1990, the first All India Mahila Samakhya Meeting was organised by the National Project Office in New Delhi. Representatives from the State Office attended the meeting and spent 5 exciting days sharing their experiences and learning from each other. The most heartening aspect of this meeting was the tremendous sense of solidarity felt by the entire group.

बात पर बल दिया जा रहा है कि संघ सहयोगिनियों की मौजूदगी के बिना उपरोक्त मुद्दों को स्वतंत्र रूप से स्वयं हल करने योग्य बन सकें ।

संघ की महिलायें एकता आत्म-सम्मान और आत्म निर्भरता को धीरे धीरे लोकप्रिय बना रही है वे पुरूषों द्वारा महिलाओं की बैठकों, संघ कुटियों के निर्माण के विरोध को आत्म विश्वास से हल कर रही हैं ।

सहायिकाओं की बैठके: सहायिकाओं की बैठकें प्रति माह आयोजित की जाती रही । यद्यपि अनेक सहायिकाओं की पहचान की जा चुकी है और उन्हें प्रशिक्षण दिया जा चुका है तथापि प्रत्येक संघ की मासिक बैठकों में आमतौर पर एक -एक प्रतिनिधिक्रम से भाग लेता है ।

कार्यशालायें और प्रशिक्षण

शिशु सदन कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण: अप्रैल और मई 90 में शिशु सदन कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के प्रारंभिक चरण के बाद अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में, सितम्बर और अक्तूबर 1990 में उनके साथ अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए ताकि शिशु-सदनों को प्रभावी ढंग से चलाने के उनके प्रयासों को मजबूत बनाया जा सके। इन कार्यक्रमों का मुख्य बल इन मुद्दों पर था ﴾।﴿ बाल विकास -यह कैसा होता है ﴾।।﴿ साधारण खेल तैयार करने के कौशल प्राप्त करना और बच्चों के खेलों के लिए स्थानीय सामग्री एकत्रित करना ﴾।।।﴿ सीखने की प्रक्रिया को और अच्छी तरह समझना ﴾।।/﴿ शिशु सदन के प्रबंध का कौशल ।

........./=

5. The State Programme Director along with external Resource Persons participated in the mid-term review (September, 1990) of the work in Bidar and Bijapur districts. The State Resource Consultants acted as key facilitators in this process.

6. In October, 1990, Resource Persons from Bombay helped in organising a workshop on micro planning for rural development. Dr. Acharya, a renowned expert in decentralised development and Smt. Prema Gopalan of SPARC, shared their experience in developing the micro-level planning with our mahila sanghas.

7. Mahila Samakhya Karnataka and AIKYA, Bangalore co-sponsored a workshop on Management of Gender Differences. This afforded an opportunity for our staff to examine gender positions. The Assistant Director and District Programme Coordinator of Bidar were among the faculty for the workshop.

8. With a view to improve our documentation system and the writing skills of Sahayoginis and other staff, a writing workshop was organised in January, 1991 by the State Office. The hall-mark of this workshop was the outstanding contribution of such doyens of Kannada literature as Shri. Ramayya, Dr. Ramachandra Sharma and Ms. R. Poornima.

9. The Mahila Mahiti Mela at Bidar:

This highly successful event was undoubtedly the crowning achievement so far. Although it was the result of intensive team work and the labour of one and all, the State Office played a pivotal role in conceiving planning and coordinating it. The most ambitious inter district activity ever attempted, it was a test of our organisational skills as well as the extent to which women had been mobilised. A series of preparatory planning workshops were held before the Mela was actually conducted. The grand success of the mela proved that we had passed the test with flying colours !

10. Barely two days after the triumphant experience of the Mahiti Mela, a tragic incident occurred only a few miles away in Nagur village of Aurad taluk. One of our Sahayoginis, who had begun working in this village only a few months earlier, was bound and raped in her own room by two teenage boys, both relatives of the family in whose house she was staying. This was the first challenge of it's kind faced by our organisation, and after the initial feelings of shock, anger and disbelief, we swung into action. Both, the State and National Programme Directors reached Bidar, and an emergency meeting was held with the

साक्षरता प्रशिक्षण :- साक्षरता प्रशिक्षण के दूसरे चरण का आयोजन किया गया जिसमें 30 गावों की 30 महिलाओं ने भाग लिया इनमें से 12 पहले ही अपने गावों में साक्षरता कक्षायें आयोजित कर रही है और वे प्रगतिशील दल से संबन्धित है । इस श्रंखला में तृतीय चरण की कार्यशाला मारकुंड़ा गांव में आयोजित की गई । इस चरण में प्रगतिशील दल ने पत्र लिखना, बैंक में खाते खोलना और चलाना, घड़ी में समय देखना गुणा, भाग, कन्नड व्याकरण और कुछ सामान्य अंग्रेजी के शब्द और मुहावरे सीखे ।

अस्ट्र ओल प्रशिक्षण :- आठ महिलाओं को चूल्हा बनाना और स्थापित करना सिखाया गया । इन महिलाओं ने 45 चूल्हों का निर्माण किया है और अब दूसरी महिलाओं को प्रशिक्षण देने की स्थिति में हैं ।

भूमिकाओं और जिम्मेदारियों पर कार्यशाला :-

यह कार्यशाला राज्य कार्यक्रम कार्यालय में महिला समाख्या की विभिन्न पदाधिकारियों भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को बेहतर ढंग से समझने के लिए आयोजित की ।

कवरेज का विस्तार : कार्यक्रम के विस्तार के लिए अनेक नए गांव लिए गए हैं । साथ ही सम्पर्क दौरे और बैठकें आयोजित की गई हैं । इसके लिए अनुकूल प्रतिक्रिया हुई हैं ।

बीजापुर जिला रिपोर्ट

साक्षरता आंदोलन : इस अवधि में, टीम के प्रौढ़ शिक्षा (जन) निदेशालय द्वारा बीजापुर जिले में प्रारंभ किए गए साक्षरता अभियान में सक्रियतापूर्वक सामिल किया गया । इस अभियान का लक्ष्य जिले में सभी निरक्षरों को

...../=

other Sahayoginis. The State Programme Office was instrumenting in designing the future plan of action along with the Districts. It was planned that a protest march would be taken out to Nagur,where effigus of the two culprits were burnt to express the deep abhorence of this horrendous crime. Over 400 women from diiferent parts of the district participated in the march on the 12th of February, although, it happened to be a very important local festival.

11. As part of the follow up of the Bidar Mahiti Mela, the State Office has been actively engaged in bringing out a series of information booklets which are of key interest and concern to sangha women. These include reproductive health, herbal medicine, law, environment, etc. So far three booklets have been published. "Magalu Doddavaladalu" (Daughter grows up) - dealing with the maturation process; "Antaralada Lokadalli" (The world within us) - dealing with pregnancy, child birth and related health problems; "Hithala Akka" (Helpful Backyard Sister) - a treatment manual of 35 plants and herbs which can be used for common ailments; and "Hasira Wodalu" - an exploration of the environmental question. These booklets have been extremely well received, not only by the village women, but also by other NGOs and organisations.

12. This year's annual Sammelan was held in March, 1991 at Mysore. It was distinguished by the presence, for the first time, of some sangha representatives. They enjoyed participating in this large meeting and blended easily with the group. Also, unlike last year when only the Director, Consultants, Coordinators and Resource Persons were in the core planning team, this year the Sahayoginis also joined the core group. What was the weak about the Sammelan this year was that the entire team had evolved in leaps and bounds, and was far ahead than the core group had anticipated - so much so that the entire session plan was found to be out of step with this highly evolved, matured team and therefore had to be changed completely. A week of joy, learning and reflection, the title gave by the team which prepared the Sammelan report sums up this feeling : They called it "Alokada Tavarinalli" (At our mother's house).

13. The State Office Staff have also been involved in providing their resources in other workshops and seminars, which has not only enabled them to upgrade their skills but also established linkages with other agencies. For instance, the State Programme Director was an active member on the National Advisory Commission on Child Labour; participated in the Groots Seminar on housing and was invited to serve on the faculty of a training programme for grassroot workers in the U.S.

पहचान करना और उन्हें साक्षर होने के लिए प्रेरित करना है । इस प्रक्रिया में व्यापक क्षेत्रीय दौरे ग्रामीणों साथ संवाद, सरकारी गैर-सरकारी तथा अन्य कर्मचारियों के साथ मिलकर काम करना शामिल था । चूंकि बीजापुर में साक्षरता दर राज्य की तुलना में अत्यधिक कम है और महिलाओं की साक्षरता 10 %. से भी कम है, इस अभियान का प्राथमिक लक्ष्य महिलाओं तक पहुचना था । हमने इसे एक ऐसे उत्तम सुअवसर के रूप में देखा जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके । सरकार द्वारा उठाये गये मुख्य कदम महिलाओं पर केन्द्रित हो और यह भी सुनिश्चित किया जा सके कि महिलायें शक्ति प्राप्त करने के एक साधन के रूप में साक्षरता प्राप्त कर सकें । जोकि महिला समाख्या कार्यक्रम पूर्वक भाग लेने का हमारा निर्णय इसीआधार पर लिया गया था ।

हमारी टीम तालुक स्तर पर शिक्षकों (जिसमें तालुक स्तर के पर्यवेक्षक और गावं स्तर के शिक्षक शामिल थे) के लिए प्रशिक्षण की योजना बनाने और उन्हें आयोजित में सलंग्न थी । इसमें बीजापुर जिले के सभी तालुकों को प्रणाली विज्ञान पढ़ाया गया और उनमें जागरूकता लाई गई ।

आंदोलन का दूसरा चरण 15 अगस्त, 1990 को पूरे बीजापुर जिले में प्रारंभ किया गया । जिले में एक बड़ा जत्था बनाया गया और महिला समाख्या के पूरे स्टाफ ने इसमें भाग लिया और लोगों के बीच साक्षरता के महत्व को समझाया तथा नारों गीतों नृत्यों आदि द्वारा पठन पाठन के प्रति जागरूकता जगाई । एक सजीव झांकी जत्था में आकर्षण का मुख्य केन्द्र थी हमारी सहयोगिनियों ने अकेले ही 27 और 31 अगस्त, 1990 को अ ने कार्य क्षेत्र में एक जत्था आयोजित किया और दीवारों पर लिखकर तथा नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से लोगों का ध्यान साक्षरता की ओर आकर्षित करने का प्रयास किया । इन प्रेरणादायी

...../=

STATISTICAL PROFILE OF MAHILA SAMAKHYA KARNATAKA

Particulars	Bidar	Bijapur	Mysore
Total No. of villages	150	177	123
Total No. of Taluks	4	6	8
Total No. of Sahayoginis	14	17	18
Approximate No. of women sangha members	5000	3000	7000
Sangha huts:			
- Completed	4	-	9
- Under construction	5	-	1
- Land obtained	-	10	5
Child Care Centres	6	-	19
Literacy Classes	45	*	26

* Adult Education Centres in Bijapur District are being run under the total literacy campaign.

Staff Profile of the State Programme Office:

Name	Designation
Ms. Srilatha Batliwala	State Programme Director
Ms. Vasumathi .D.	Chief Accounts Officer (deputee of State Accounts Department)
Ms. Uma Kulkarni	Resource Consultant
Ms. Devayani .K.	Stenographer
Ms. Sreelatha H.R.	Accountant-cum-Office Assistant
Ms. Chandana. S. Wali	L.D.C.
Mr. Manjunath . H.	Driver
Mr. Hanumanth Rao. M.	Messenger

कार्यों के साथ वे महिला समाख्या के लक्ष्यों और उद्देश्यों को संप्रेषित करने में भी सफल रहीं ।

इस जत्थे ने महिला समाख्या टीम को ग्रामीण महिलाओं तक पहुचने और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करने में भी सहायता दी । टीम ने जत्था के स्वयं सेवकों को नुक्कड़ नाटक कठपुतली प्रदर्शन, जनपद गान, झांकी चित्रात्मक नारों आदि जैसे संचार माध्यमों की विभिन्न पद्धतियों को प्रयोग करने की भी प्रेरणा दी । सहयोगिनियोंने महसूस किया कि जत्थे ने उन्हें अपने ज्ञान को प्रसारित और प्रतिबिम्बित करने का वृहत मंच प्रदान किया है, जिससे उनमे पहले से अधिक आत्म विश्वास आया है ।

साक्षारता संबन्धी इस अभियान का जो भी असर हुआ हो, इसका हमारे सदस्यों पर स्थायी प्रभाव पड़ा है । उनके आत्म विश्वास वाक शक्ति, सृजनात्मकता, एक विशेष उद्देश्य के लिए हर क्षण काम करनेकी प्रतिबद्धता और इच्छा में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है । मात्र इसी कारण से साक्षारता अभियान में सहभागिता से बीजापुर जिले के सम्पूर्ण महिला समाख्या के लिए लाभ हुआ है । क्षेत्रीय कार्य महीने के अंतिम सप्ताह में सहयोगिनियों की बैठकें आयोजित होती रहीइस अवधि में इन बैठकों में निम्न लिखित मुद्दों पर बल दिया गया :-

(i) आंदोलन में महिला समाख्या की सहभागिता

(ii) इस सहभागिता में प्राप्त अनुभव ।

...../=

EXCERPTS FROM GENERAL COUNCIL MEETING MINUTES

Second General Council Meeting - December 31st, 1990

"In Karnataka the programme was officially launched in April 1989, and is mainly concentrating on the least developed northern belts of the state namely - Bidar and Bijapur, and the tribal belts of Mysore district. This is basically a programme of women's empowerment through education, and it is difficult to define its goals in concrete terms. She read out the parameters of empowerment from the Policy Document which are as follows:

- building a positive self-image and self-confidence;
- developing ability to think critically;
- building up group cohesion and fostering decision-making and action;
- ensuring equal participation in the process of bringing about social change;
- encouraging group action in order to bring about change in the society; and
- providing the wherewithal for economic independence."

"A few creches have been started and women were trained in the maintenance and management of creches by the State Programme Office. Women in the age group of 40-45 are looking after the creches. Similarly, Adult Education Instructors have been trained and regular night classes are conducted in the villages. A workshop on Economic Development Programmes was organised last year in Bidar and a few small efforts have begun in this direction. Eg: Eight women underwent Lidkar training for six months in Bangalore after which they approached the Banks for getting loans to start a small leather factory."

"In Bidar the women felt that in order to strengthen their Sanghas, supportive groups such as the youth and Mandal members should be made aware of the role of women in the family, organisation and the society at large. In this context, a workshop was organised for youth groups and Mandal members in which nearly 150 men participated from the four taluks of Bidar."

"Ms. Nirmala Shiraguppi, Bijapur District Programme Coordinator stated that in Bijapur the programme was launched with the help of the Zilla Parishad. The Sahayoginis were selected through workshops. The first six months were spent in building rapport with the women. There are 52 Sanghas in Bijapur and have been meeting regularly. The women do not depend on the Sahayoginis to conduct their meetings. Women tackle the local problems (such as an ANM not attending to the pregnant women) by themselves. Our Sahayoginis only provide the information about the various government schemes and programmes, and women take the initiative to approach the officials to get their work done. The Sanghas have started identifying Sahayakis, and are planning to have a training programme for them in March 1991."

(iii) हमारे कार्यक्रम के कार्यान्वयन के इस अनुभव का प्रयोग कैसे किया जा सकता है ।

महिला समाख्या द्वारा शामिल बीजापुर जिले में चार तालुकों के 148 गांवों में से 96 गावों में अच्छा काम जम बैठा है । ऐसा लगता है कि महिलायें महिला समाख्या के महत्व को समझने लगी हैं । पहले जब सहयोगिनियाँ गावों में जाती थी तो महिलायें पूछा करती थीं आप हमें क्या देंगी । परन्तु अब महिलायें दल बनाकर स्वयं सहयोगिनियों के पास आती है और उनसे अपनी समस्यायें बताकर उनके समाधान में मदद लेती है ।

यह ग्यारह सहयोगिनियों के कार्य का परिणाम है जो संगठित होने, नियमित बैठकें, समस्या की पहचान, उन पर चर्चा और उनका स्वयं समाधान ढूढ़ने की आवश्यकता पर बल देते हुए संघ बनाने के लिए इन गावों की महिलाओं को प्रेरित करती रही है । दूसरे गांवों में प्रारंभिक संपर्क कार्य को सुदृढ करने की गति ही काफी धीमी है और संघ की अवधारणा को अपनाने में तो इन महिलाओं को अधिक समय लगेगा । पिछले कुछ महीनों में क्षेत्रीय कार्य के दौरान अनेक रोचक घटनायें घटी हैं । एक गांव में एक देवदासी का पुत्र भद्दे मजाक कर सहयोगिनियों को चिढ़ाया करता था । एक दिन सहयोगिनियों ने इस युवक को सबक सिखाने का निश्चय किया और उसे इस प्रकार ललकारा-तुम कौन हो ? तुम हम लोगों का मजाक क्यों उड़ाते हो ?

...../=

"Now we have extended our work to the Harijan villages. Before doing so we asked the Girijans whether they have any objections to this. They said, "No! they are also women like us they should also get the benefits we are getting from you". By this reply we could see the disappearing caste discriminations."

"A literacy workshop was conducted for 15 women from different villages. This was done on the demand from the women for literacy. The women got the time to attend this workshop which itself was a great achievement. Through our experiences we only found women saying, "it is not possible for us to learn", but we never came across women saying, "we do not want to learn". "

"Our Sahayoginis conducted a survey of the Astra Oles covering 1220 households in six taluks of Mysore district. Through this survey we were able to find out the causes for the poor utilisation of the oles. Now we have planned to conduct training for few women in the construction, maintenance and use of these oles."

"We decided to evaluate the past six months (commencing from April 1990) work in the field and spent one month in this process. Sahayoginis visited the villages of other Sahayoginis and were able to identify the successes and failures in the progress of the programme there. After this evaluation the programme is taking up on a faster pace."

"Talking of expanding the programme to two more districts in the state next year, Shri. V. Moily, at the first instance, proposed to take up Raichur and Mandya districts. After a detailed analysis of the economical and political situations, and the literacy rates prevailing in the districts of Gulbarga, Mandya, Raichur, and South Kanara, the Council suggested to take up Gulbarga and Raichur districts. Smt. S. Batliwala said that some exploratory work would be initiated in these two districts as soon as possible."

$$$$$$$$$$$$$$$$

अपनी मां की दुर्दशा जानते हुए भी तुम्हें शर्म नहीं आती और तुम हमसे ऐसा व्यवहार करते हो जैसा व्यवहार अन्य लोग तुम्हारी मां के साथ करते हैं । तुम पढ़े लिखे लगते हो पर क्या महिलाओं के प्रति तुम्हारा यही रवैया है------ हम दूसरे लोगों से क्या उम्मीद रख सकते हैं । तुम्हें शर्म आनी चाहिए । इस तरह घटिया व्यवहार करने के बजाय तुम्हें देखना चाहिए कि अपनी मां जैसी महिलाओं की स्थिति तथा अन्य लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन के लाने के लिए तुम क्या कर सकते हो इसका उस व्यक्ति पर गहरा प्रभाव पड़ा । दूसरे दिन उसने सहयोगिनी से क्षमा मांगी तथा किसी अन्य महिला के साथ वैसा व्यवहार न करने की कसम खाई । उसने उनसे उन जैसे लोगों का संघ बनाने में मदद करने को भी कहा जो देवदासी तथा गांव की अन्य कमजोर महिलाओं की मदद कर सकें । इस समय वह गांव में एक युवा संघ संगठित कर रहा है ।

<u>जिला संसाधन दल (डी आर जी)</u>

बीजापुर महिला समाख्या का जिला संसाधन दल गठित किया गया महिला समाख्या कार्यक्रम के परिचय के पश्चात पहली बैठक में क्षेत्रीय कार्य की प्रगति और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में जिला संसाधन दलों की भूमिका की चर्चा की गई । डी आर जी ही वह मुख्य मंच

...../=

EXCERPTS FROM EXECUTIVE COMMITTEE MEETING MINUTES

Fourth Executive Committee meeting - July 21, 1990

"Village-level Sangha meetings are conducted regularly to discuss women's problems, decisions are taken on action, and followed up. Monthly Sahayakis' meetings are conducted at taluk level to know what is happening in the field and what facilities they can get through Government programmes."

"Interest in literacy continues to spread even in villages which have only recently been included in the programme. In some villages, women have asked their own school-going children to teach them; in others, the Sahayogini takes on the role of the teacher, setting aside an hour for literacy during her weekly visit. In 12 villages the groups are being taught by literate women from their own villages."

"The Sangha women expressed the need for Child Care Centres in six villages and consequently 12 women were selected by the Sanghas for Creche Workers Training organised by the State Office. The training was highly successful in imparting to the workers concepts of the physical, intellectual and emotional needs of pre-primary children as well as managerial aspects of running creches."

"The Director emphasised that a new pattern of management was being developed for these Centres in Bidar. The Centres will be planned, supervised, and managed entirely by the Sanghas themselves, not by Mahila Samakhya. Any problems in their operation would therefore have to be tackled by the women themselves."

"One of the key events that took place in Mysore is the Girijana Mahila Mela which was organised and conducted by tribal women themselves. We only conveyed the idea to them, and Sahayoginis and Sangha women throughout H.D.Kote taluk discussed and debated on how it should be organised and what was the purpose, etc. An organising committee, comprising women representatives from participating villages, was formed. The Committee drew up lists of invitees, contacted officials, etc. The members especially learnt to sign their names so they could sign invitations themselves."

"The venue for the mela and the mela programme itself was designed after a process of going from village to village and collecting the suggestions of women in each place. Women also collected food grains from each household to prepare the meals to be served at the Mela. As there was no stage or dais erected, the officials were forced to literally be on the same level as the women and had lively dialogues with the women, and shared

जिसके माध्यम से महिला समाख्या अन्य विभागों, संस्थाओं और स्वैच्छिक संगठनों से तालमेल बनाती है जिससे हमें जिले में अच्छी सहायता प्रणाली बनाने का अवसर मिलता है ।

जिला संसाधन दल की बैठक 13 सितम्बर, 1990 को सम्पन्न हुई, जिसका मुख्य उद्देश्य डी आर जी के सदस्यों से परिचय करना और आंदोलन में सहभागिता से प्राप्त महिला समाख्या के अनुभव और भूमिका का लाभ उठाना था । महिला मिलन दिवस आयोजित करने की योजना भी कार्यसूची में थी ।

गांव स्तरीय मूल्यांकन

एक वर्ष के क्षेत्रीय कार्य के पश्चात गावं स्तर पर मूल्यांकन कार्य आवश्यक प्रतीत हुआ । इसके लिए विभिन्न तालुकों की सहयोगिनियों के छोटे-छोटे टीम बनाये गए और उनसे अपने ग्रामीण सह-कर्मियों के कार्यों का मूल्यांकन करने के लिए कहा गया । एक बैठक आयोजित की गई जिसमें मूल्यांकन की अवधारणा का पता लगाया गया और हमारे कार्य तथा हमारे लिए इसके महत्व पर विस्तार से चर्चा की गई । कुछ बुनियादी सिद्धांत भी विकसित किए गए जिसका उद्देश्य आलोचना नहीं समझना था, "पास" या " फेल" करना नहीं बल्कि सुधार लाना तथा महिलाओं के प्रति विश्वसनीयता को बढ़ाना आदि था । तब मूल्यांकन किए जाने के लिए प्राचलों का एक सेट विकसित किया गया जो इस प्रकार है :-

...../=

information about schemes and programmes. We did not provide any means of transport for people to come to the Mela. We felt and said that it is women's programme and if they want to attend they should attend at their own cost. Nearly 1000 women had come to this Mela. In fact, Mahila Samakhya's name did not appear anywhere in the proceedings, not even on the invitation cards."

"The impact of the Mela was not limited to solidarity-building alone. A great deal of learning and germination of new ideas also took place. Women from other taluks are eager to organise melas of their own."

"Many Sanghas now feel the need for Sangha huts. There is also a proposal from six villages to start Child Care Centres. Presently they are in the process of acquiring land for construction of 10 Sangha huts in Bijapur."

"District Resource Group member from Bijapur, added that Bijapur Mahila Samakhya team is playing an active role in the Saksharata Andolan in Bijapur. Sahayoginis have planned to cover 150 villages through this Campaign."

"The Director stated that Districts had been provided metal body Jeeps, which had been delivered only six months ago. However, these vehicles are posing constant problems due to the extremely poor quality of the body work for which a huge amount had been charged. Windshields, window glass, door and window handles were breaking at a touch. On her request the Chairman agreed to write a covering letter to take up the matter with the Consumer Council. "

"The Chairman raised the question as to whether any plans for expansion of the programme into new districts are being considered. Smt. V. Ramachandran said that while the Govt. of India would definitely support expansion, the Karnataka Society had decided earlier this year to consolidate its work before any further growth. Director said her team would start the exploration of new districts this year, so that one more district could be taken up in 1991-92. Ms. Vimala Ramachandran said that Government of India is not likely to fix any rigid targets. "

<u>Sixth Executive Committee meeting - December 31st, 1990</u>

"Smt. Srilatha Batliwala, State Programme Director, and Member-Secretary of the Executive Committee of Mahila Samakhya Karnataka, informed the members about the Mahila Mahiti Mela to be held in Markunda Village, Bidar Taluk, Bidar District, during the first three days of February 1991. She said that the planning for this Mela was done early in 1990, when it was felt that Sangha women from the different districts should exchange experiences, and also as a response to their thirst for new knowledge and information on a variety of subjects and issues related to their lives."

— सहयोगिनियों और महिला के बीच संबंध की कोटि ।

— क्या संघ का गठन किया गया है ? यदि हां तो बैठकें आयोजित करने, कर्मचारियों के पास जाने आदि के लिए यह किस सीमा तक अपनी सहयोगिनी पर निर्भर है ।

— यदि संघ का गठन किया गया है तो इसमें कितनी महिलायें हैं ? कितनी नई महिलायें शामिल हो रही हैं । और क्या किसी महिला ने इसे छोड़ा है ?

— संघों द्वारा पहचान लिए गए मुद्दे क्या हैं ? इनके लिए क्या अनुवर्ती कार्रवाई की गई है ? इन मुद्दों की जानकारी प्राप्त करने में सहयोगिनी ने कितनी सूचना दी है या मदद की है ? क्या महिलाओं को पर्याप्त अवसर दिए जा रहे हैं या सहयोगिनी का प्रभुत्व बना हुआ है ?

— समाख्या के लक्ष्यों और गतिविधियों के सम्बंध में महिलाओं के क्या विचार है ?

— क्या सहायिकाओं की पहचान की गई है ?

— क्या संघ-कुटी के लिए भूमि की निशानदेही की गई है-- और यदि हां तो क्या महिलाओं इसे बनाने के लिए तैयार हैं ।

——————/=

"The idea of the Mela is to provide women with information in different areas like, economic development programmes, access to credit, health, law and legal systems, rural technology, and Government and Zilla Parishad schemes and resources. She stated that aproximately 1200 women from Bidar, Bijapur and Mysore, about 50-100 women from Maharashtra, and nearly 100 resource persons and visitors will be participating in this Mela. About 300 children are also expected to be there along with their mothers at the Mela. Basically, it was felt that this experience of getting together in a large group is itself very empowering."

"Separate tents will be put up for carrying out the various functions such as, registration, cooking, cultural activities, dispensary, creche, and for conducting sessions. 13 committees with two coordinators from each district and the state office have been formed for making arrangements before, during and after the Mela. Apart from these committees, more than 100 volunteers have agreed to look after the security of the participants."

"Smt. S. Batliwala said that in March 1991, Mahila Samakhya Karnataka will be conducting its field evaluation during which time, it is planned that each district team visits the other district for evaluating their work. And also the district teams will evaluate the work of the State Office. In this process, Consultants from outside the programme will be involved to evolve an evaluation framework. "

"The members were informed that discussions have been held for some time at different levels on promoting some of the senior Sahayoginis in the Districts to the post of Resource Persons. A need has been felt to have two Resource Persons at the District level, and there is no reason why some of the outstanding Sahayoginis who have grown with the programme should not be given this responsibility. The honorarium of Rs.3000 which is currently allotted for one Resource Person can be paid to two persons @ Rs.1500 each."

"The Committee approved this decision and suggested that the State Programme Director conduct formal interviews of all Sahayoginis before promoting two as Resource Persons. The District Programme Coordinators should decide whether they want one or two Resource Persons. In case two Resource Persons are appointed in the districts, the present post of Assistant could be converted to that of Assistant Coordinator, if necessary, after seeking the Committee's approval."

— क्या शिशु सदन, अनौपचारिक स्कूल साक्षरता कक्षा या अन्य सेवाओं के संबंध में उनकी मांग है । और क्या इन पर अनुवर्ती कार्रवाई की जा रही है ?

इन प्राचलों सहित अन्य प्राचलों पर ध्यान देते हुए सहयोगिनियों ने नए सिरे से मूल्यांकन पर बल दिया जो अगले 14 दिनों में किया जाना था । मूल्यांकन टीम में एक सहयोगिनी उसी तालुक की थी और दूसरी दूसरे तालुक की । एक विस्तृत समय और स्थान की योजना बनाई गई जिसमें सबने इसका कड़ाई से पालन करने का वचन दिया यह भी निश्चय किया गया कि अधिक से अधिक महिलाओं से मिलने के लिए रात्रि दौरे आयोजित किए जाएँगे ।

<u>मूल्यांकन की समीक्षा</u>

ग्राम स्तरीय मूल्यांकन के पूरा हो जाने पर सहयोगिनियों ने अपनी अपनी उपलब्धियाँ आदान प्रदान करने और एकत्रित सूचना का विश्लेषण करने के लिए 11 से 14 मार्च तक बैठक की । मूल्यांकन के लिए चुने गए 47 गांवों में से केवल 44 को शामिल किया गया, सब ने पूरे अनुभव को खासतौर से इससे सीखे अनुभवों को काफी सकारात्मक माना । इससे न केवल उन्हें अपनी कमजोरियों का पता चला बल्कि ग्रामीण महिलाओं के साथ विचार विमर्श से कुछ आयाम सुदृढ़ हुए ।

........./=

BIDAR DISTRICT REPORT

Bidar is dominated by a huge fort, and now... storming the district are, nearly 111 women's Sanghas, spread across the 4 taluks of Bidar district, beginning to establish their presence in the villages rallying around issues of women's empowerment and community development, children's education, etc. In these Sanghas women are constantly discussing about the necessity of a Sangha, its aims, and their vision of 'What will our Sangha be? Sahayoginis and Sahayakis are involved in a joint effort to change attitudes of women about the Sangha, from viewing it as a means "to merely secure loans or get economic benefits", to understand and accept that Sangha can become a space for women to explore new ways of self reliant living through their collective efforts. To facilitate this process, the use of role-plays, meetings, field visits to government offices, banks,etc., learning workshops and discussions are being used effectively.

Mahila Mahiti Mela

This mela was the largest exercise undertaken so far by Samakhya, and we felt proud that Bidar was chosen as the venue. However, this also meant a lot of responsibility had to be taken by our team to ensure that the event would be a success. Consequently much care was given to planning, for which two major meetings were held in December and January.

We selected Markunda village of Bidar Taluk as the venue for the mela, because there was a large, flat stretch of ground adjacent to the village, and the village Mandal Pradhan, being a member of the Bidar DRG, would give us all help and cooperation.

At the planning meetings, each aspect of organising the mela was discussed in detail and committees were formed to take up the specific responsibilities. Despite the fact that some of the Bijapur, Mysore and Maharashtra groups had arrived only in the early hours of the morning, some after journeys of nearly 30 hours, the inaugural ceremony began only one hour later than planned. The sight of nearly 1500 women, assembled in the central tent, bright-eyed and ready to begin three days of learning and discussion, was powerful and moving.

Immediately after the inauguration, the women moved in orderly groups to their assigned tents for the sessions on law, health and economic programmes. A great deal of time had gone into the planning of how the participants could be disbursed to different sessions so that each one got an exposure to a range of information over the three days. Thus sahayoginis were given the task of taking their groups to the right tents for the right sessions.

हेलू-केलू न्यूजलेटर

यह मासिक न्यूजलेटर नियमित रूप से निकल रहा है देवदासियों लम्बनियों और बाल-विवाह पर विशेषांक निकाले गए हैं। प्रत्येक माह टीम के चार सदस्य न्यूजलेटर प्रकाशित करने की जिम्मेदारी लेते हैं और यह संघ की महिलाओं की पसंद बन गई है। महिलाये खासतौर से नाम की प्रंशसा करती है क्योंकि वे मानती है कि यह नाम उनकी आवाज बुलंद करने में. न्यूजलेटर की भूमिका को प्रतिलिम्बित करता है।

कार्यशालायें और प्रशिक्षण :

महाराष्ट्र के एन. पी. ओडने पुणे में " महिलाओं के लिए बचत स्कीम आयोजित किए इस कार्यशाला में चिट फंड जैसी लघु बचत योजनाओं के गुण-दोषों और प्रबंध पर विशेष रूप से विचार किया गया। मानव और सामाजिक विकास सोसाइटी ने बंगलौर में सृजनात्मक लेखक " पर कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला इस प्रकार आयोजित की गई कि कार्यकर्मियाँ अपने लेखन और प्रलेखन कौशलों में सुधार ला सकें।

मेस्को ने संचार" पर एक त्रिदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। ग्रामीण निर्धन महिलाओं को संगठित करने और उनमें जागरूकता जगाने के संदर्भ में विभिन्न संचार माध्यमों को सीखने और प्रयोग करने में सहयोगिनियों को सहायता देने के लिए यह प्रशिक्षण

...../=

Throughout the districts women have been discussing about the Mahiti Mela in their sangha meetings and sharing the informations they received with others. The sangha women of many villages have started a small savings programme and have opened accounts in the bank. Herbal remedies are also being extensively discussed.

Sangha Activities

1. Literacy: This continues to be a major learning activity, regularly and actively pursued in all Sanghas. More women are getting convinced of the Kannada proverb that "The mark of thumb impression, leaves a bitter feeling". Women are repeatedly revealing how important a role literacy has become in their lives, be it reading an alphabet or writing a letter. In many more Sanghas, other than the earlier 12 villages, bi-weekly literacy classes are on, run by the literate women and children of those villages.

Interest in literacy continues to spread even in villages which have recently been included in the programme. In such areas, groups of women are discussing the logistics: where to gather, who can they find to teach them, arranging for lights, etc. In some villages, women have asked their own school going children to teach them. In few villages the sahayoginis takes on the role of the teacher, setting aside an hour for literacy during her weekly visit.

Sangha Registration: Since Mahila Samakhya Karnataka's long-term goal is make women's sanghas independent and help them build up their own federation, we have decided that once each sangha reaches a point of strong collective functioning, they should be assisted to register themselves. This also facilitates the task of getting grants and schemes for themselves, not only from us but other sources as well. Sangha registration is thus not a mechanical process, but part of a long-term strategy of independence and self-reliance for village collectives.

Sangha Hut construction: Work continues in the struggle to obtain land for the sangha huts, a very long drawn out process. In some villages, the mandal agreed to give land but what was offered was of such poor quality that they had to reject it, after which the mandal refused to give them any alternative. In some places, women are simultaneously asking for adjacent plots for creches. Sangha buildings are under construction in 3 villages, with women themselves being fully involved in the construction and eager to finish as early as possible.

काफी उपयोगी था ।

मैसूर जिला रिपोर्ट: 1990 से 1991 की अवधि के दौरान महिलाओं की सहभागिता बढ़ी और बहुत से नए संघ अस्तित्व में आए । विद्यमान संघों की गतिविधियाँ धीमी, किन्तु स्थिर गति से चल रही है और अधिकांश क्षेत्रों में सामूहिक प्रयास प्रारंभ करने में काफी रूचि है । साक्षरता और स्वास्थ्य, इन दो मुद्दों पर काफी चर्चा हुई और लोगों में इनके प्रति रूचि जागृत हुई । तथापि सभी बैठकों में जिस विषय पर सबसे अधिक चर्चा हुई वह यह था कि संघ की निधियों का किस प्रकार प्रयोग किया जाना चाहिए । गांवों में इस मुद्दे को जैसी गति मिली है उससे सम्बंधित संघों की एकता और अखंडता स्पष्ट है ।

इस तथ्य के बावजूद कि
/ यह समय कृषि सम्बन्धी गतिविधियों के कारण काफी व्यस्तता की अवधि है संघों ने नियमित रूप से बैठकें आयोजित कीं और पहले से अधिक जिम्मेदारियां वहन की । इस अवधि के कार्य की सर्वाधिक उल्लेखनीय घटना यह है कि संघों की गतिविधियों में महिलाओं की सहभागिता स्पष्ट नजर आती है ।

<u>संघों की गतिविधियाँ और चर्चाएं</u> उन सभी गांवों में जहां संघ चल रहे है चर्चा का मुख्य मुद्दा यह था कि संघ की निधियों का सर्वोत्तम

...../=

Sangha Accounts: As per Samakhya's procedures, sanghas cannot receive their honorarium until they have become cohesive enough to appoint signatories and operate a bank account, for which all assistance is provided. This is also a necessary prerequisite before sanghas are registered. By March end, 34 sanghas had opened their accounts and received the honorarium of Rs.400/- per month for 1990-91.

Sangha Discussions: In many villages there is a growing awareness of the need to involve more Muslim women in their Sanghas. Putlibai and Imambi are making a special effort in this direction. In many other villages, discussions are going on about the need to include poor women of all communities and castes in their sanghas.

In one of the village the sangha women are divided along communal lines. The Harijan and Christian women are demanding separate sanghas., Despite the best efforts of sahayogini Chandrakala, who has tried to suggest various neutral venues, the two groups of women are adamant. A special strategy will have to be used here for the problem to be resolved.

Legal issues and health topics are also a regular feature discussed in meetings, and women are showing a lot of interest in having access to new information be it government laws, immunisation, precautions taken against common diseases, small savings or ways of securing government resources.

Interaction with government officials/departments:

Sangha women along with Sahayoginis continue visiting various government offices, to meet and discuss with the concerned officials on different issues. These women are gradually getting used to the ways of negotiation with concerned officials, and authority figures to avail of assistance like widow/old age/handicapped pensions, repair of borewells, street lights, etc. They are beginning to know and understand what constitutes a criminal case. Through their practical field visits - face to face dialogues with various people, they have been able to find ways of getting available loans sanctioned, ration cards supplied, etc. The shift has been in terms of many Sanghas having become capable of tackling the above issues independently without the presence of Sahayoginis.

उपयोग कैसे हो ? संघ के सदस्यों ने संघ की बैठकों के आयोजन हेतु संघ कुटी बनाने में गहरी रूचि दिखाई । कुछ गावों के संघों ने संघ की निधियों का प्रयोग गवेषणाओं पर करने का निश्चय किया है । संघ की महिलायें, संघ की निधियों से भेड, बैल और बकरियां खरीदने की योजना बना रही हैं ताकि संघ के पास धन का अतिरिक्त स्त्रोत हो । संघ के भवन के विस्तार के लिए संघ की निधियों का प्रयोग किया जा रहा है । कुछ अन्य लोग इसे बर्तनों और इमों आदि पर लगाने का विचार कर रहे हैं । एक गाव में महिलाओं ने नारियल की पौध खरीदने का निश्चय किया है । महिलाओं ने बोरवेलों की मरम्मत के लिए ग्राम पंचायत से सम्पर्क करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है हुनूर के विभिन्न संघों की महिलाओं ने अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों को ऋण सुविधायें प्रदान करने में जानकारी प्राप्त करने में काफी रूचि दिखाई । कुछ क्षेत्रों में ऋण प्राप्त करने की प्रक्रिया में संलग्न होने के बाद वे अब इस संबन्ध में होने वाली कठिनाइयों, खर्चों और वांछित आवेदन पत्रों की आवश्यकता महसूस करने लगी हैं । इन समस्याओं ने उन्हें और दृढ़ निश्चयी बनाया है, साथ नौकरशाही से उनका और साक्षात्कार हुआ है ।

हुनूर तालुक के अनेक संघों ने वृक्षारोपण की इच्छा व्यक्त की है । संघ की सभी सदस्यों ने पौधा लगाने का निश्चय किया

...../

उपयोग कैसे हो ? संघ के सदस्यों ने संघ की बैठकों के आयोजन हेतु संघ कुटी बनाने में गहरी रूचि दिखाई । कुछ गावों के संघों ने संघ की निधियों का प्रयोग गवेशाओं पर करने का निश्चय किया है । संघ की महिलायें, संघ की निधियों से भेड, बैल और बकरियां खरीदने की योजना बना रही हैं ताकि संघ के पास धन का अतिरिक्त स्त्रोत हो । संघ के भवन के विस्तार के लिए संघ की निधियों का प्रयोग किया जा रहा है । कुछ अन्य लोग इसे बर्तनों और ड्रमों आदि पर लगाने का विचार कर रहे हैं । एक गाव में महिलाओं ने नारियल की पौध खरीदने का निश्चय किया है । महिलाओं ने झोपडियों की मरम्मत के लिए मंडल पंचायत से सम्पर्क करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है हुन्सूर के विभिन्न संघों की महिलाओं ने अनुसूचित जातियों और अनु-जनजातियों को ऋण सुविधायें प्रदान करने में जानकारी प्राप्त करने में काफी रूचि दिखाई । कुछ क्षेत्रों में ऋण प्राप्त करने की प्रक्रिया में संलग्न होने के बाद वे अब इस संबन्ध में होने वाली कठिनाइयों, खर्चों और वांछित आवेदन पत्रों की आवश्यकता महसूस करने लगी हैं । इन समस्याओं ने उन्हें और दृढ़ निश्चयी बनाया है, साथ नौकरशाहो से उनका और साक्षात्कार हुआ है

हुन्सूर तालुक के अनेक संघों ने वृक्षारोपण की इच्छा व्यक्त की है । संघ के सभी सदस्यों ने पौधा लगाने का निश्चय किया है ।

...../=

Sangha women are gradually internalising the concepts of unity, self-respect and self-reliance. They are confidently handling men's opposition to women's meetings, building of Sangha huts, etc.

Sahayakis' meeting: Sahayakis' meeting continue to be held every month. Although several sahayakis have been identified and training in each sangha normally one representative participates in the monthly meetings by rotation.

Workshops and Trainings

Creche Workers' Training: After the earlier phases of Creche workers' training in April and May'90, as a follow up, a series of programmes were planned with them in the months of September and October 1990 to consolidate their efforts at running creche's effectively. The main focus of these programmes were on :(i) Child development - how does it happen ? (ii) Acquiring skills of preparing simple games and organising local material for children's games. (iii) Understanding more about systems of learning. (iv) Skills of managing the Creche.

Literacy Training : The second phase of the literacy training was held and 30 women from 30 villages participated. 12 of them are already conducting literacy classes in their own villages and belong to the advance group. The 3rd phase workshop in this series was held at Markunda village. In this phase the advance group learnt to write letters, to open and operate bank accounts, reading the time, multiplication and division, Kannada grammar, and a few common English words and phrases.

Astra Ole Training: Eight women were taught how to construct and instal the choolas. The women have constructed 45 choolas and are now capable of training other women.

Workshop on Roles and Responsibilities: This workshop was organised by the State Programme Office to have a better understanding of the roles and responsibilities of the various functionaries in Mahila Samakhya.

Expansion of coverage: Several new villages have been taken up for expanding the programme, and contact visits and meetings have been held. The response has been positive.

जिसके लिए संघ 10 रूपये का भुगतान कर रहा है और संघ का प्रत्येक सदस्य 2/-रू0 प्रति पौध की दर से भुगतान कर रहा है । संघ के नाम पर तीन पौधे लगाये गए हैं जिसकी सभी सदस्य देखभाल करते हैं । नारियल पौध की खरीद के लिए संघ की निधियों में से 350 रू0 की राशि ली गई है ।

महिलाओं ने स्वयं को शिक्षित करने तथा संघ साक्षरता की पुस्तकें पढ़ने में गहरी रूचि दिखाई है । फलत: गुल्ली बैंक लेगाला में दो दिवसीय साक्षरता शिविर लगाया गया । अधिकांश राज्यों में साक्षरता कार्यक्रमों में गति आ रही हैऔर काफी संख्या में महिलायें सीखने के लिए आगे आ रही हैं ।

अधिकांश संघ बैठकों और सहायिका प्रशिक्षण कार्यक्रमों में महिलायें लिंग सम्बन्धी भेद-भाव पर प्राय: चर्चा करती हैं । महिलायें गाव की आम सुविधाओं पर चर्चा करती हैं और संघ की बैठकों में उन पर कार्रवाई करती है । अधिकांश संघ स्वयं अपना संचालन कर रहे हैं और स्वयोगिनी की प्रतीक्षा किए बिना मासिक बैठकें आयोजित करतें हैं । हुन्नूर तालुक के सभी 70 गांवों में संघ पुस्तकालय भलीभांति चल रहे हैं इन पुस्तकालयों में 1000 से अधिक पुस्तकें एकत्रित की गई हैं ।

कोलेगाल तालुक के दो गावों में संघ की महिलाओं ने वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाया वे स्वयं पौध को लेकर आई और प्रत्येक घर में एक पौधा लगाया ।

...../=

TABLE SHOWING NO. AND DURATION OF TRAINING PROGRAMMES FOR 1990-91

Trainings	for Sahgy.	Drt. (days)*	for Shy/Sgh women	Drt. (days)*	for Staff	Drt. (days)
Self Development	3	7	8	34	-	-
Creche/Child care	-	-	6	11	-	-
Literacy/ Education	-	-	8	19	-	-
Health	-	-	1	1	-	-
Communication Skills	2	28	1	6	-	-
E.D.P.	1	5	-	-	-	-
Technology	-	-	-	-	-	-
Women's Issues	1	1	-	-	-	-

Sahgy = Sahayoginis
Drt. = Duration
Shy/Sgh women = Sahayakis, Sangha women
* Total No. of Days.

Staff Profile of Bidar Distriot Implementation Unit:

Name	Designation
Ms. Vedamanie	District Programme Coordinator
Mr. Joshi	Accounts Superintendent (deputee of State Accounts Department)
Ms. Usha Rao	Resource Person
Ms. Anita .V.	Assistant
Ms. Sunita Madhav Rao	Steno-typist
Mr. Salim	Driver
Mr. Veerashetty	Messenger
Mr. Suryakanth	Messenger

कुछ क्षेत्रों में महिलायें आश्रम स्कूलों और आंगनवाड़ियों की दुरावस्था के कारणों की छानबीन कर रही हैं और उनमें सुधार लाने के लिए और अधिक जिम्मेदारी वहन करने के अवसर तलाश रही हैं। विभिन्न संघों के महिलाओं के दल तालुक स्तर के विभिन्न सरकारी और जिला परिषद कार्यालयों का दौरा ,कर्मचारियों से मिलना और उनकी योजनाओं जैसे भू-सेना सिद्ध बोर्ड के बारे में सूचनायें एकत्र करना प्रखंड विकास अधिकारी और तहसीलदार कार्यालयों का दौरा प्रारंभ कर दिया है, ऐसे सम्पर्क बनाने वाले अपनी नई-नई जानकारियों का/अन्य संघों के साथ आदान प्रदान कर रहे हैं और विभिन्न मुद्दों को सुलझाने के लिए अपने अनुभवों का लाभ दे रहे हैं।

सभी तालुकों में संघों ने स्वयं को पंजीकृत करना और संघ के नाम बैंक खाते खोलना प्रारंभ कर दिया है ताकि महिला समाख्या से रू0 400/- का मानदेय प्राप्त किया जा सके महिलाओं को बैंक में संयुक्त खाते चलाने के नियमों और प्रक्रियाओं तथा स्वयं को स्वतंत्र खाताधारी के रूप में पंजीकृत करने में आने वाली कठिनाइयों की सावधानी पूर्वक जानकारी दी जा रही है। सभी मामलों में संघ के सदस्यों द्वारा रू0 11/- पंजीकरण शुल्क के रूप में भुगतान किया जा रहा है।

......../=

BIJAPUR DISTRICT REPORT

Saksharata Andolan: In this period, the team was actively involved in the Literacy Campaign launched in Bijapur district by the Directorate of Adult (Mass) Education. The goals of the campaign are to identify all illiterates in the district, aggresively motivate them to become literate. This process involved intensive field visits and dialogues with the villagers, interaction with the government and non-government organisations, and other officials.

Since the literacy rate in Bijapur is one of the lowest in the state, and women's literacy well below 10%, reaching women was a priority in the campaign. On our part, we saw this as an excellent opportunity to ensure that a major government initiative keeps women in focus, and also to enable women to obtain literacy as a tool of empowerment, which is one of the key objectives of the Mahila Samakhya programme. Our decision to participate actively in the campaign was taken on this basis.

Our team was involved in planning and conducting training for large group of instructors (comprising of taluk level supervisors and village level teachers) at the taluk level, covering all the taluks of Bijapur district in teaching methodology and awareness building.

The second phase of the Andolan was launched throughout the Bijapur District on August 15th, 1990. A big Jatha was conducted in the district and all the Mahila Samakhya staff participated in it conveying the importance of literacy to the people and generating enthusiasm towards teaching and learning through slogans, songs, dances, etc. A huge tableau was the centre of attraction in the Jatha. Our Sahayoginis alone conducted a Jatha between 27th and 31st August, 1990 in their working areas and with the use of wall-writings and street-plays made an attempt to draw the attention of the public towards literacy. Along with motivational process they were also able to convey the objectives and goals of Mahila Samakhya.

The Jatha also helped Mahila Samakhya team to approach the village women and motivate them to learn. The team also motivated the volunteers in the Jatha to use different methods of communication media such as, street plays, puppet shows, janapada songs, tableau, posters slogans, etc. The Sahayoginis felt that the Jatha provided a broad platform for them to share and reflect on their learnings, as a result they have all become more confident about themselves.

अधिकांश क्षेत्रों में महिलायें विभिन्न सरकारी कार्यालयों का दौरा करने और विभिन्न स्कीमों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के विषय में उत्साह दिखा रही हैं। उनका कहना है "अपना काम कराने के लिए हम दूसरों पर निर्भर रहना नहीं चाहती।

संघ की कुटी का निर्माण : महिलायें इस स्तर पर निकट भविष्य में प्रारंभ किए जाने वाले विभिन्न कार्यकलापों के लिए एक अपना स्थान होने की आवश्यकता महसूस करती हैं। इस आवश्यकता के अनुसार उन्होंने भूमि की पहचान करना और संघ के लिए कुटी निर्माण की योजना बनाना प्रारंभ कर दिया है।

इस प्रक्रिया का एक रोचक पहलू यह है कि संघ की महिलाओं से ऐसा चित्र बनाने के लिए कहा जा रहा है जिसमें वे घर के बाह्याकार और अंतराकार को दर्शा सकें। अनेक महिलाओं ने सहयोगिनियों को अपने चित्र पहले ही दे दिए हैं। जुलाई के अंत तक तीन चौथाई परियोजना गांवों ने संघ-कुटी के निर्माण के लिए भूमि की पहचान कर ली है और भूमि प्राप्त करने के लिए संघ को आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर दिया है। संघ के भवन का शीघ्र सुनिश्चित करने के लिए महिलायें भी साहसिक कदम उठा रही है। संघ-कुटियों का निर्माण कार्य दो गांवों में पूरा कर लिया गया है। इन संघों की महिलायें अच्छी सड़क का निर्माण कराने और बस सुविधा उपलब्ध कराने के लिए जिलाधिकारी पर दबाव डाल रही हैं।

...../=

Whatever the outcome or impact of this campaign on literacy per se, it has had a lasting effect on our team members. Their confidence, eloquence, creativity, commitment and willingness to work round-the-clock for an important cause, has grown immeasurably. For this alone, participation in the literacy campaign has borne fruit for the entire Mahila Samakhya programme in Bijapur district.

Field Work:

Sahayoginis meeting were held regularly in the last week of every month. The main focus at these meetings during this period was on the following:

(i) The involvement of Mahila Samakhya in the Andolan;
(ii) The experience gained in this participation; and
(iii) How this experience can be used in the implementation of our programme.

Out of 148 villages covered by Mahila Samakhya in four taluks of Bijapur District, good rapport has been built in 98 villages. The women appear to have understood the objectives of Mahila Samakhya. Earlier, when Sahayoginis visited the villages, women used to ask "What will you give us?" But now, women themselves form groups and come to the Sahayoginis to share their problems and take their help in solving them.

The above is the result of the work of eleven Sahayoginis who have been actively motivating the women in these villages to move towards the formation of Sanghas by emphasising the need to organise, meet regularly, identify problems, discuss them and seek solutions themselves. In the other villages, consolidation of initial contact work is proceeding more slowly, and more time is needed for these women to move to the Sangha concept.

Several interesting incidents have occurred in the course of field work in the past few months: In another village, the son of a Devadasi used to tease the Sahayogini, passing sexually deragatory remarks. One fine day the Sahayogini decided to tackle the young man, and challenged him thus: "Who are you? Why do you make fun of me? When you know your own mother's plight, do you not feel ashamed to look upon me as other men look upon your mother? You are supposed to be educated, but this is the attitude you have towards women....what can we expect from other men? You should be ashamed! Instead of behaving so cheaply, you should see what you can do to change the situation of women like your mother, and the attitude of other men!"

The effect on the lad was profound. On her very next visit, he apologised to the Sahayogini, and promised not to repeat such behaviour with any other woman. He also asked her to help him organise other young men like him into a Sangha which can support Devadasis and other powerless women in the village. He is now in the process of organising a Youth Sangha in the village.

आर्थिक कार्यकलाप :

मंचेगोवडान हाली, एच·डी·कोटे/तालुक को जिन महिलाओं को साबुन बनाने का प्रशिक्षण दिया गया था, वे सफलतापूर्वक साबुन बना कर बेच रही हैं। नवम्बर 1990 में तैयार पिछले लैंच में उन्हें 50 रु· का लाभ हुआ। उन्होंने प्रति साबुन दो रुपये विक्रय मूल्य बढ़ाने का निश्चय किया है। अतिगुले पुरा (चामराजनगर तालुक) की महिलायें साबुन बनाना चाहती हैं। जिला समन्वयक ने उन्हें यह सपष्ट कर दिया है कि महिला समाख्या उन्हें इस बात का प्रशिक्षण देगी कि कच्चा माल कहां से मिलेगा, कैसे खरीद और बिक्री की जाएगी और इसके बाद वे किस प्रकार स्थापित होंगी।

* मुनेश्वरा हैमलेट, चामराज नगर तालुक की महिलाओं ने क्वायर बोर्ड से रस्सी बुनने का काम प्रारंभ करने के लिए आवेदन किया है। श्री निवासपुरा की महिलायें पहले ही यह काम कर रही हैं। गोरेमाड्डु गावं की रस्सी बनाने वाली महिलाओं ने 8 रु· प्रति किलो के स्थान पर 12 रु0 प्रति किलो की दर से मांग की है जो उचित दर है।

* भारत एग्रो- इंडस्ट्रीज फेडरेशन ने मारानहाडी की महिलाओं को आम के पौध प्रदान की है। इससे धीरे-धीरे उनकी आमदनी बढ़ेगी।

* पश्चिमी घाट विकास योजना के अन्तर्गत मारानहाडी के आठ परिवारों को मुर्गे मुर्गियां प्रदान किए गए।

....../=

District Resource Group (DRG): The District Resource Group of Bijapur Mahila Samakhya was formed. After an introduction to the Mahila Samakhya programme, the progress of field work and the role of DRG in the implementation of the programme was discussed in the first meeting. The DRG is the main forum through which Mahila Samakhya interacts with others departments, institutions and voluntary organisations, which in turn creates an opportunity for us to build a good support system in the district.

The District Resource Group meeting was held on September 13th, 1990, mainly to acquaint the members of the DRG and share the Mahila Samakhya's role, and the experiences gained from their participation in the Andolan. The plan of celebrating Mahila Milan Day was also on the Agenda.

The Village-level Evaluation: After more than one year of field work, an evaluation at the village level seemed necessary at this stage. Towards this end, the sahayoginis from different taluks were formed into small teams and asked to evaluate their colleagues work in the villages. a meeting was held at which the concept of evaluation was explored in detail, and its value to our work and ourselves discussed. Some basic principles were also developed (Not to criticise but to understand, not to "pass" or "fail" but improve, to increase accountability to women, etc.) A set of parameters to be assessed were then developed, as follows:

- Quality of relationship between the sahayogini and women;
- Has a sangha formed? If formed, how dependent is it on the sahayogini for conducting meetings, going to officials, etc.
- If a sangha has formed, how many women are in it? How many new women are joining and have any women left?
- What are the issues identified by the sanghas? What is the follow-up of these? How much information has the sahayogini provided or helped women get about these issues?-Are enough opportunities being given to women or does the sahayogini dominate?
- What is women's understanding of Samakhya's objectives and activities?
- Have sahayakis been identified?
- Has land been identified for the Sangha hut - and if so, are the women ready to build it?
- Are there demands for creche, non-formal school, literacy class or other services, and are these being followed up?

With these and many other parameters in mind, the sahayoginis set out for a fresh round of evaluation to be carried out over the next 14 days. The evaluation teams comprised one sahayogini from the same taluk coupled with one from a different taluk. A detailed time and location plan was drawn up, with everyone promising to adhere strictly to it. It was also decided that night visits would be made to meet more women.

(8) जयलक्ष्मीपुरा और कुप्पेगाले संघ की महिलाओं ने लघु बचत योजनाएँ प्रारंभ की है ।

(9) कुछ महिलाओं ने अनु.जाति/अनु.जनजाति को आपरेशन से बकरियां और 110 रु० प्राप्त किए ।

(x) एच.डी. कोटे तालुक संघ की महिलाओं ने स्ट्रीट लाइट वृद्धावस्था पेंशन जल व्यवस्था, कृषि कार्य मवेशी के लिए कार्य, मछलीपालन योजना और पापड़ तथा अचार बनाने के लिए कार्य हेतु संबंधित प्राधिकारियों को अनेक प्रकार के आवेदन पत्र दिए ।

<u>साक्षरता कार्यशाला</u> : इस अवधि की मुख्य विशेषता "हमें पढ़ना और लिखना चाहिए तथा हमें सीखना और पढ़ाना चाहिए" कार्यशालाएं थी इनमें से पहली संघ की 15 इच्छुक महिलाओं के लिए आयोजित की गई थी । विभिन्न संघों की महिलाओं ने इन कार्यशालाओं में भाग लिया और उन्हें शिक्षण के आश्चर्यजनक और मनोरंजक तरीके बताये गए इस तथ्य ने इस क्षेत्र में नई लहर पैदा कर दी है । यह हमारी गंभीर जिम्मेदारी है कि हम इस नव जागृत रुचि का उचित सम्मान करें ।

बाल अनुरक्षण केन्द्र : शिशु विहार कुछ छिटपुट घटनाओं को छोड़कर उन दस गावों में अच्छी तरह चल रहे हैं जहां वे स्थापित किए गए हैं । कम से कम दस और गावों ने शिशु विहार उद्घाटन में प्रारंभ करने में रुचि दिखाई है । सहयोगिनियों ने संघ की महिलाओं तथा जाने वाले बच्चों की माताओं के लिए लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का निश्चय किया है ताकि वे केन्द्र की भूमिका को बेहतर तरीके से समझ सकें । शिशु-सदन के अध्यापकों का प्रशिक्षण फरवरी माह में आयोजित किया गया । शिशु सदन के अध्यापकों ने 2 माह से चलाये जाने वाले शिशु सदनों के अनुभवों बच्चों की सहभागिता और शिक्षण के विभिन्न स्तरों पर विचार विमर्श किया ।

<u>सहायकी प्रशिक्षण शिविर</u>

गुलादाबायालू (कोलेगल तालुक) में आयोजित सहायकी प्रशिक्षण कैम्प में 5 गावों की 35 महिलाओं ने भाग लिया । यह दो दिवसीय प्रशिक्षण कैम्प संघ के नेताओं के लिए एक नया अनुभव था ।

<u>विस्तार</u> : नए गावों में विस्तार के लिए सभी गावों में आयोजना और तैयारी दौरे आयोजित किए जा रहे हैं । नए गावों में महिलाओं की प्रतिक्रिया काफी अच्छी रही है ।

Review of Evaluation: Upon completion of the village-level evaluation, the sahayoginis met from the 11th to 14th March to share their findings and analyse the information gathered. Out of the 47 villages selected for the evaluation, only 44 had been covered; the group felt very positive about the whole experience, especially *how much* they had learnt from it. It not only helped them identify their weak points, but the very process of discussion with village women had itself strengthened certain dimensions.

Helu-Kelu" Newsletter: This monthly newsletter is coming out regularly. Special issues on Devadasis, Lambanis and Child Marriage have been brought out. Each month, four members of the team take responsibility for bringing out the newsletter, which has become a favourite of the sangha women. The women especially appreciate the name, which they feel truly reflects the role of the newsletter as a channel for their own voices.

Workshops and Trainings:

"Savings Schemes for Women" organised by some Maharashtra-based NGOs in Pune. The workshop focussed on the merits, demerits and management of small savings schemes like chit funds.

The workshop on "Creative Writing" organised by the Society for Human and Social Development in Bangalore. The workshop was designed to enable activists to improve their writing and documentation skills.

A three-week workshop on "Communication" organised by MESCA. This training was very useful in helping the Sahayoginis to learn and use different communication media in the context of organising and creating awareness among poor rural women.

TABLE SHOWING NO. AND DURATION OF TRAINING PROGRAMMES FOR 1990-91

Trainings	for Sahgy.	Drt. (days)*	for Shy/Sgh women	Drt. (days)	for Staff	Drt. (days)
Self Development	1	4	2	5	-	-
Literacy/ Education	1	9	-	-	1	4
Communication Skills	4	46	-	-	1	5
Women's Issues	-	-	1	1	-	-

Sahgy = Sahayoginis ; Drt. = Duration
Shy/Sgh women = Sahayakis, Sangha women ; * Total No. of Days.

माधवन एंड त्रिनाथ
चार्टर्ड एकाउंटेंट

32/1 [illegible], तृतीय [illegible]
आर्गोअब्कास [illegible] रोड [illegible]
-560042 दूरभाष: 567182

लेखा परीक्षक की रिपोर्ट

1. हमने समाख्या कर्नाटक के 31 मार्च 1991 तक के संलग्न तुलन पत्र और समाप्त वर्ष के लिए सोसाइटी के आय और व्यय के लेखों की लेखा परीक्षा कर ली है जिसकी रिपोर्ट इस प्रकार है :

2. क उपरोक्त के अतिरिक्त वे सभी सूचनाएँ और स्पष्टीकरण उपलब्ध कराये गये जो हमारी जानकारी और विश्वास के अनुसार लेखा परीक्षा के प्रयोजनार्थ आवश्यक थे।

ख लेखा बहियों की जांच के बाद हमारी राय है कि सोसायटी ने लेखा बहियों को उचित रूप से सुरक्षित रखा है।

ग इस रिपोर्ट में संदर्भित तुलन-पत्र तथा आय और व्यय विवरण लेखा बहियों में दर्शाये गए विवरण के अनुरूप ही है।

घ. हमें उपलब्ध कराई गई सूचना और दिए गए स्पष्टीकरण के बाद हमारी राय है कि उक्त लेखे उपर्युक्त हमारी टिप्पणियों के अनुसार निम्न के संबंध में सत्य और निष्पक्ष हैं:

(i) 31 मार्च, 1991 तक सोसायटी की कार्य स्थिति के तुलन-पत्र के मामले में।

(ii) उसी तारीख को समाप्त होने वाली अवधि में आय से अधिक/ व्यय के संबंध में आय और व्यय के लेखे के मामले में।

स्थान: बंगलौर

दिनांक : 14 जनवरी, 1992

माधवन एंड त्रिनाथ
चार्टर्ड एकाउंटेंट

Staff Profile of Bijapur District Implementation Unit:

Name	Designation
Ms. Nirmala Shiraguppi	District Programme Coordinator
Mr. Gopal Purohit	Accountant
Ms. Susheela .V.	Assistant
Ms. Geetha Bandari	Steno-typist
Mr. Siddappa	Driver
Mr. Anil Chauhan	Messenger
Mr. Suresh Karkun	Messenger

माधवन एंड त्रिनाथ
चार्टर्ड एकाउंटेंट

32/1 प्रथम तल, तृतीय ग्राम
आगा अब्बास अली रोड
बंगलौर- 560042
दूरभाष : 567132

महिला समाख्या -कर्नाटक

टिप्पणियां

1. (क) पूर्ववर्ती वर्ष के आंकडे, चालू वर्ष के आकड़ों से तुलनीय नहीं हैं क्योंकि पूर्ववर्ती वर्षों के आंकड़े 4 फरवरी, 1989 से 31 मार्च 1990 तक की अवधि से संबंधित है

   (ख) पूर्ववर्ती वर्षों के आंकड़ों को चालू वर्ष के आंकड़ों से तुलनीय बनाने के लिए जहां कहीं आवश्यक समझा गया उन्हें नए सिरे से तैयार किया गया है ।

2. अचल सम्पत्तियों पर मूल्य ह्रास की गणना की गई है और आयकर अधिनियम के अर्न्तगत निर्धारित दरों पर उन्हें लेखाओं में दर्शाया गया है ।

3. सोसाइटी व्यापारिक आधार पर अपने आंकड़े सुरक्षित रखती है ।

MYSORE DISTRICT REPORT

The period between 1990 to 1991 has witnessed increased participation of women and the growth of many new sanghas. Activities of existing sanghas are proceeding slowly but steadily and there is great interest in most areas to undertake collective action. Literacy and health were two issues that witnessed much discussion and evoked interest. However, the use to which sangha funds should be put was the most widely discussed topic in all meetings. The dynamics that this issue has given rise to in many villages speaks much for the unity and integrity of the respective sanghas.

Despite the fact that this period happened to be the busiest for farming activities, sanghas continued to meet regularly and even took on more responsibilities. The most remarkable feature of this period of work is the noticeable change in women's participation in sangha activities.

Sangha Activities and Discussions: In all villages where sanghas are operating, the key point of discussion was how to put sangha funds to the most profitable use? Keen interest was evinced by the sangha members on building a sangha hut in which to hold sangha meetings. In some villages the sangha has opted to invest the sanghas' funds in cattle. The sangha women are planning on purchasing sheep, oxen and goats with the sangha funds, so that the sangha has an independent source of revenue.

Sangha funds are being used to extend the sangha building. Some others are planning to invest it on utensils and drums. In one of the village, the sangha women have decided to purchase coconut seedlings. Women have also taken a key role in contacting the Mandal Panchayat for repairing the borewells.

Women in different sanghas of Hunsur have shown interest in learning more about the loan facilities for scheduled castes and tribes. Having become part of the loan procurement process in some areas, they are now realising the difficulties involved, expenses and applications needed. These problems have, however, only made them more determined, while, at the same time, expanding their exposure to bureaucracy.

Many sanghas in Hunsur taluk have expressed their desire to plant trees. All sangha members have decided to plant a sapling each for which the sanghas is paying Rs.10/- and the individual sangha member, Rs.2/- each. 3 seedlings have been planted in the name of the sangha and are tended by all members. An amount of Rs.350/- has been taken from the sanghas' funds for purchase of coconut saplings.

पार्थसन आर एंड त्रिनाथ
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट

महिला समाख्या-कर्नाटक
31 मार्च,1991 को समाप्त हुए वर्ष के लिए आय और व्यय लेखा

31·3·1990 को स्थिति के अनुसार	व्यय		
रू0			रू0
5;12,428	स्टाफ के वेतन के लिए		7,10,489·65
-	स्टाफ के छुट्टी के भुगतान के लिए		4,805,00
-	स्टाफ के चिकित्सा खर्च की अदायगी के लिए		5,374·80
90,470	भुगतान किए गए किराये के लिए		1,29,620·00
63,300	शुल्क और मानदेय के लिए		94,646·00
38,730	वाहन मरम्मत और रख रखाव के लिए		1,46,059·04
22,129	डाक खर्च,तार और टेलीफोन के लिए		81,475·00
19,798	मुद्रण और लेखन सामग्री के लिए		31,339·65
15,781	पुस्तकों और पत्रिकाओं के लिए		35,882·70
	यात्रा और वाहन खर्च के लिए:		
6,382	स्थानीय वाहन खर्च	2,597·05	
8,379	यात्रा	1,67,054·05	169651·10

Women have shown keen interest in educating themselves and reading the books of the sangha literacy. Consequently, a two-day literacy camp was held at Gullibacklegala. Literacy programmes are gaining momentum in most villages and more women are coming forward to learn.

Women are beginning to discuss the issue of gender discrimination very frequently and intensely in most sangha meetings and sahayaki training programmes. Women discuss common village problems and take action on them during the sangha meetings.

Most sanghas are operating on their own and conduct monthly meetings without waiting for the sahayogini. The sangha libraries are functioning well in all 20 villages of Hunsur taluk. More than a 1000 books have been gathered in these libraries.

A tree plantation programme was carried out by the sangha women in two villages of Kollegal taluk. They brought the saplings themselves and planted one in each house.

In some areas, women are looking at the reasons for the poor functioning of Ashram schools and Anganwadis, and are exploring avenues for taking more responsibility to improve them. Groups of women from different Sanghas have begun visiting various Government and Zilla Parishad Offices at Taluk level, meeting officials and getting information about their schemes. Eg: Land Army, Silk Board, BDO and Tahsildar's Offices, etc. Those who have made such contacts are sharing their new-found information with other Sanghas, as also their experiences in tackling various issues.

In all taluks, sanghas have begun registering themselves and also opening bank accounts in the name of the sangha in order to receive the monthly honorarium of Rs.400/- from Mahila Samakhya; Women are being carefully taught the rules and procedures for operating the joint account in the bank, and also the full implications of registering themselves as an independant entity. In all cases the Rs.11/- registration fee is being paid by the sangha members themselves.

In most areas women are enthusiastic to visit different government offices and get information about varius schemes. They say "we don't want to depend on others to get our work".

Sangha Hut Construction: At this stage, women feel the necessity to have a place of their own for the various activities that would intend to take up in the near future. With this need they have started identifying the land and planning for the construction of Sangha huts.

3,130	विद्युत और जल खर्च के लिए		10,762·35
2,955	विज्ञापन खर्च के लिए		565·00
4,0[illegible]	दलाली-कार्यालय परिसर के लिए		6,500·00
2,356	बैंक प्रभार के लिए		2,979·50
-	बैंक कर्ज पर दिये जाने वाले ब्याज के लिए		2,191·59
2,500	लेखा परीक्षा शुल्क के लिए		3,500·00
58,368	विविध खर्च		49,262·30
	कार्य कलाप खर्च के लिए		
1,74,054	प्रशिक्षण और प्रेक्षण	4,28,773·20	
1,18,435	कार्यशालाओं, बैठकों और सेमिनारों के लिए	4,81,566·75	
9,732	सहायता सेवा	11,170·55	
-	बाल आरक्षण सुविधा	65,859·85	
-	सहायता सेवा और सामाजिक प्रयोग	11,876·20	
20,049	व्यावसायिक पाठ्यक्रम	1,059·05	10,09,106·40

An interesting part of this process is sangha women being asked to draw sketches of how the sangha "mane" (house) should look and what it should be like inside. Many women have already given their drawings to sahayoginis. By July end, about three-fourths of the project village have identified land for the sangha hut and are submitted applications for grant of the land to the sangha.

Women are also taking keen and bold steps to ensure speedy construction of the sangha building. The construction of the sangha hut have been completed in two villages. The women of these sanghas are now pressurising the District Collector for construction of a road and extension of bus facilities to their villages.

Economic Activities:

* In Manchegowdanahalli, H.D. Kote taluk, women who were trained in soap-making are successfully manufacturing and marketing soap. For the last batch made in November 1990, they got Rs.50/- profit. They have decided to increase the selling price to Rs.2/- per soap. Women from Attigulipura (Chamarajanagar taluk) are interested in soap-making. The District Coordinator has made it clear to them that Mahila Samakhya will given them training in where to get the raw material, how to buy and sell, after which they will have to stand on their own.

* Women of Muneshwara hamlet, Chamarajanagar taluk, have made an application to get rope-weaving work from the Coir Board. The women of Srinivasapura are already doing this work. In Goremadu village women rope-makers who were being paid Rs.6/- per kg are demanding Rs.12/- per kg which is the fair price;

* The Bharath Agro-Industries Federation has given mango saplings to the women of Maranahadi. This will gradually yield income for them;

* Eight families of Maranahadi also got poultry under the Westerm Ghats Development Plan;

* In Jayalaxmipura and Muguthanamule sangha women have started small savings scheme;

* A few women have been able to obtain goats and along with Rs.110/- each from the Schedule Caste and Schedule Tribes Cooperation;

	सहयोगिनियों के खर्च के लिए		
2,96,315	वेतन	3,88,412·52	
16,691	लेखन सामग्री और पुस्तकें	12,912·30	
1,086	आकस्मिक खर्च	1,174·80	
			4,02,499·62
	महिला संघ:		
3,600	मानदेय	5,52,000·00	
3,903	लेखन सामग्री और आकस्मिक खर्च	21,852·85	
14,615	कुटी निर्माण	1,51,990·07	
-	पुस्तकें और शैक्षिक सामग्री	1,62,535·95	
-	दरी, डैस्क आदि	1,00,952·30	9,89,342·10
15,89,986			38,76,159·41

* Women from sanghas of H.D.Kote taluk have submitted a variety of applications to the concerned authorities for: streetlights, old-age pensions, water problems, agricultural loans, loans for cattle, pisciculture scheme, and loans for making papads and pickles;

Literacy Workshop:

The hallmark of this period were the workshops "Let's Learn Reading and Writing and Let's Learn and Teach. While the first was conducted for about 15 interested women from the sanghas. The fact that women from different sanghas attended these workshops, and were exposed to exciting and joyful methods of learning, has created a ripple effect in the field. It is a serious responsibility for us to be able to respond to this new interest.

Child Care Centres: The Shishuviharas are functioning efficiently in the ten villages where they have been started, barring minor problems here and there. Interest has been shown in at least ten more villages to start Shishuviharas. Sahayoginis have decided to conduct small training programmes for sangha women and mothers of the children who are sent to the centres, in order to improve their understanding of the role of the centre. Training to creche teachers was conducted in February. The creche teachers discussed their experiences of the creche which they were running since 2 months, participation of children and the various stages of learning.

The Sahayaki training camp at Gulladabayalu (Kolegal taluk) was attended by 35 women from 5 villages. This two-day training camp was a new exposure for the sangha leaders.

Expansion: Planning and preparatory visits for expanding into new villages is going on in all villages. The responso of women in new villages has been quite good.

32/1 पु... तल, ... क्रॉस
आशा अभिवास अली रोड, बंगलौर-5600462

31·3·1990 तक की स्थिति के अनुसार	आय		
			रु0
	ब्याज से प्राप्त		
6,03,690	बैंकों में जमा राशि पर	4,29,609·45	
94,937	बचत बैंक खातों से	72,055·65	5,01,665·19
-	विविध आय		1,000·00
12,00,179	आय से अधिक हुआ व्यय		38,26,759·11
18,98,806			43,29,434·21

TABLE SHOWING NO. AND DURATION OF TRAINING PROGRAMMES FOR 1990-91

Trainings	for Sahgy.	Drt. (days)*	for Shy/Sgh women	Drt. (days)	for Staff	Drt. (days)
Self Development	3	9	2	4	2	6
Creche/Child care	-	-	4	7	-	-
Literacy/ Education	-	-	3	16	-	-
Health	1	1	2	4	-	-
Communication Skills	3	58	-	-	5	34
E.D.P.	2	2	-	-	-	-
Technology	1	1	-	-	1	1
Women's Issues	1	2	1	2	3	6

Sahgy = Sahayoginis
Drt. = Duration
Shy/Sgh women = Sahayakis, Sangha women
* Total No. of Days.

Staff Profile of Mysore District Implementation Unit:

Name	Designation
Ms. Vani Umashanker	District Programme Coordinator
Mr. Prasad .K.S.	Accounts Superintendent (deputee of State Accounts Department)
Ms. Kiran Kumari	Assistant
Ms. Usha P.A.	Steno-typist
Mr. Ramappa	Driver
Mr. Purushotam	Messenger
Mr. Perumal	Messenger

* * * * * * *

माधवन एंड त्रिनाथ
चार्टर्ड एकाउन्टेंट

32/1 प्रथम तल, तृतीय क्रास
आगा अब्बास अली रोड
बंगलौर-560042

15,80,986			38,76,159·41	10,98,806	43,29,434·21
	प्रौढ़ और अनौपचारिक शिक्षा के लिए:				
–	वेतन	10,700·00			
–	प्रशिक्षण खर्च	265,00			
–	आकस्मिक खर्च	869·50	11,834·50		
	जिला संसाधन इकाई के लिए:				
–	ऐक्या को अनुदान		1,85,000·00		

	मूल्यह्रास के लिए				
2,54,359	वाहन	1,69,581·00			
53,185	कार्यालय उपस्कर	62,654·00			
10,276	फर्नीचर और फिक्सचर	11,628·00			
-	संगणक	12,577·00	2,56,440·00		
18,98,806			43,29,434·21	18,98,806	43,29,434·21 पौंड

हमारे संलग्न रिपोर्टानुसार

हस्ता0

माधवन एवं त्रिनाद

चार्टर्ड एकाउंटेंट

कृते महिला समाख्या-कर्नाटक

हस्ता0

राज्य कार्यक्रम निदेशक

बंगलौर

दिनांक 14 जनवरी, 1992

मार्थन एंव त्रिपाठ
चार्टर्ड एकाउटेंट

महिला समाख्या-कर्नाटक

31 मार्च, 1991 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए की गई प्राप्तियां और भुगतान

31•3•1990 तक की स्थिति के अनुसार	प्राप्तियां		रु0
	प्रारंभिक कोष राशि		
-	नकद राशि	5,242•01	
-	अनुसूचित बैंकों में कोष	10,73,051•40	10,78,294•21
1,10,64,550	केन्द्र सरकार से प्राप्त अनुदान		
	निम्नलिखित से प्राप्त ब्याज:		
1,50,315	बैंकों में जमा राशि से	7,99,887•60	
94•937	बचत बैंक खातों से	72,055•65	8,71,943•25
	जमा प्राप्त हुए/परिपक्व हुए:		
-	बैंकों में जमा	60,50,000•00	
-	टेलीफोन	7,100•00	
-	किराया	26,050•00	
-	गैस	500•00	60,83,650•00

–	बैंक से कर्ज	5,00,000·00
–	अग्रिम धनराशि की वसूली	64,063·00
–	कर्ज- अन्य	1,000·00
–	विविध प्राप्तियां	1,000·0
2,780	स्रोत पर काटा गया आयकर	–
1,13,12,582		85,99,950·46

महिला [illegible] - [illegible] 32/1 [illegible]

आशा [illegible] रोड, बंगलौर-560042

31-3-1990 तक की स्थिति के अनुसार	भुगतान	रु0
रु0		रु0
5,12,428	कर्मचारियों के वेतन	6,91,705·25
-	कर्मचारियों को छुट्टी का भुगतान	4,885·00
-	स्टाफ की चिकित्सा खर्च की अदायगी	5,374·80
90,470	भुगतान किया गया किराया	1,29,628·00
63,390	शुल्क और मानदेय	94,646·00
54,987	वाहन मरम्मत और रख रखाव	1,36,773·89
15,599	डाक खर्च, तार और टेलीफोन	76,534·00
19,798	मुद्रण और लेखन सामग्री	31,339·65
15,732	पुस्तकें और पत्रिकायें	35,757·80
	यात्रा और वाहन खर्च:	

6,382	स्थानीय वाहन खर्च	2,597·05	
78,379	यात्रा	1,62,054·05	1,64·651,10
2,274	बिजली और जल प्रभार		11,374·55
2,955	विज्ञापन खर्च		665·10
4,000	दलाली कार्यालय परिसर		6,500·00
2,358	बैंक प्रभार		2,979·50
–	लेखा परीक्षा शुल्क		2,500·00
58,368	विविध खर्च		49,496·60
	परिसंपत्तियों को खरीद:		
7,63,152	वाहन		
1,59,570	कार्यालय उपस्कर	81,596·00	
1,02,763	फर्नीचर और फिक्सचर	23,797·00	
–	संगणक	32,236·00	1,37,629·00

	कार्यकलाप खर्च:		
1,74,054	प्रशिक्षण और प्रलेखन	4,28,773·20	
1,16,435	कार्यशालाओं,बैठक और सेमिनार	4,81,566·75	
10,732	सहायता सेवायें (ए0आर0 को)	11,170·55	
-	बाल अनुरक्षण सुविधायें	65,659·85	
22,55,734		9,87,170·35	15,82,360·14

1,13,12,582	85,99,950·46

1,13,12,582	85,99,950·46

हस्ता0/-

कृते माधवन और त्रिनाथ

चार्टर्ड एकाउन्टेंट

बंगलौर

दिनांक: 14 जनवरी, 1992

22,55,734		9,87,170•35	15,8[illegible],370•14
-	सेवाएं और सामाजिक प्रयोग	11,876•20	
20,049	व्यावसायिक पाठ्यक्रम	1,059•85	10,00,106•40
	सहयोगिनियों का खर्च:		
2,96,315	वेतन	3,79,162•52	
16,691	लेखन सामग्री पुस्तकें और पत्रिकाएं	12,912•37	
1,866	आकस्मिक खर्च	1,174•80	3,93,249•62
	महिला संघ:		
-	मानदेय	5,60,400•00	
14,615	कुटी निर्माण	82,000•00	
3,903	लेखन सामग्री और आकस्मिक खर्च	21,852•85	
-	पुस्तकें और पत्रिकायें	1,62,536•95	
-	दरियां,डैस्क आदि	1,00,952•30	9,27,742•10

	प्रौढ़ और अनौपचारिक शिक्षा के लिए:		
-	वेतन	10,700·00	
-	प्रशिक्षण खर्च	265·00	
-	लेखन सामग्री	869·50	11,834·50
-	जिला संसाधन इकाई:		
-	स्थापना को अनुदान		1,85,000·00
	जमा राशियां:		
75,00,000	अनुसूचित बैंकों में	20,30,000·00	
74,500	किराया	1,13,000·00	
37,400	टेलीफोन	-	
1,500	गैस	950·00	21,43,950·00

	अग्रिम धन राशियाँ:		
5,500	संगणक और प्रिंटर की आपूर्ति के लिए	-	
5,000	यात्रा	2,664.00	
500	वेतन	3,260.00	
695	अन्य	64,218.00	70,142.00
	अंतिम शेष राशि:		
5,243	नकद	48,807.03	
10,73,951	अनुसूचित बैंकों में शेष	22,36,758.67	22,85,565.70
1,13,12,582			85,99,950.46

महिला समाख्या -कर्नाटक

हस्ता0/-

राज्य कार्यक्रम निदेशक

माधवन और त्रिनाथ
चार्टर्ड एकाउन्टेंट

मिल, कार्टिक

31 मार्च, 1991 की स्थिति के अनुसार तुलन पत्र

देयतायें

31.03.1990 तक की स्थिति के अनुसार			
रू0			रू0
	पूंजीगत निधि		
	पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	98,64,370.51	
98,64,370	कम किया गया: वर्ष के दौरान आय से		
	अधिक व्यय	38,26,769.11	60.37,601.40
–	बैंकों से ऋण		5,00,000.00
	विविध ऋणदाता		
13,536	खर्च के लिए	1,16,449.50	
2,780	अन्य देयताएं	1,000.00	1,17,449.50
98,80,686			66,55,050.90

हमारी संलग्न रिपोर्ट के अनुसार
ह0/–
माधवन और त्रिनाथ
चार्टर्ड एकाउन्टेंट

बंगलौर
दिनांक: 14 जनवरी, 1992

32/1 [illegible]
आगा अब्बास अली रोड, बंगलौर-560042

31.03.1999 तक की स्थिति के अनुसार	परिसम्पत्तियाँ		
रु०			रु०
	अचल परिसम्पत्तियाँ:		
	वाहन:		
	पिछले तुलन पत्र के अनुसार	5,08,793.00	
5,08,793	कम किया गया: मूल्य ह्रास	1,69,581.00	3,39,212.00
	कार्यालय उपस्कर:		
	पिछले तुलन पत्र के अनुसार	1,06,385.00	
	वर्ष के दौरान जोड़ा गया	81,596.00	
		1,87,981.00	
1,06,385	कम किया गया: मूल्य ह्रास	62,654.00	1,25,327.00
	संगणक:		
	वर्ष के दौरान जोड़ा गया	37,736.00	
-	कम किया गया: मूल्य ह्रास	12,577.00	25,159.00

	फर्नीचर और फिक्सचर:		
	पिछले तुलन पत्र के अनुसार	92,487·00	
	वर्ष के दौरान जोड़ा गया	23,797·00	
		1,16,284·00	
92,487	कम किया गया: मूल्य ह्रास	11,628·00	1,04,656·00
	चालू परिसम्पत्तियां ऋण और अग्रिम धनराशियां:		
	क. **नकद और बैंक शेष:**		
5,243	नकद	48,807·03	
10,73,951	अनुसूचित बैंकों के प्रदत्त खातों में	22,36,758·67	22,85,565·70
	ख. **अग्रिम धन राशियां:** ऋण:		
11,695	अग्रिम धनराशियां	11,926·00	

4,53,375	…अग्रिमों पर		
	प्राप्य ब्याज	83,096·35	
16,257	पूर्व भुगतान किये गए खर्च	6,971·85	1,01,994·20
	जमा:		
75,00,000	अनुसूचित बैंकों में	34,80,000·00	
1,13,400	अन्यों में	1,93,137·00	36,73,137·00
98,80,688			66,55,050·90

कृते, महिला समाख्या-कर्नाटक

ह0/-

राज्य कार्यक्रम निदेशक

MADHAVAN AND TRINADH
CHARTERED ACCOUNTANTS

32/1, IST FLOOR, 3RD CROSS,
AGA ABBAS ALI ROAD,
BANGALORE-560 042
Tel: 5 6 7 1 3 2

AUDITORS' REPORT

1. We have examined the attached Balance Sheet of the Mahila Samakhya-Karnataka as at 31st March, 1992 and the Income and Expenditure account for the year ended on that date and report that:

2. Further to above:

   a) We have obtained all the information and explanations which, to the best of our knowledge and belief, were necessary for the purposes of our audit.

   b) Proper books of account have been kept by the Society, so far as appears from our examination of books.

   c) The Balance Sheet and Income and Expenditure Account referred to in this Report are in agreement with the books of account.

   d) In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said accounts, subject to our comment given above, give a true and fair view:

      i. in the case of Balance Sheet, of the state of affairs of the Society as at 31st March, 1992 and,

      ii. in the case of the Income and Expenditure Account, of the excess of Expenditure over Income for the year ended on that date.

Madhavan and Trinadh
MADHAVAN AND TRINADH
CHARTERED ACCOUNTANTS

BANGALORE
DATE : 10 SEP 1992

MADHAVAN AND TRINADH
CHARTERED ACCOUNTANTS
BANGALORE

MADHAVAN AND TRINADH
CHARTERED ACCOUNTANTS

32/1, 1ST FLOOR, 3RD CROSS,
AGA ABBAS ALI ROAD,
BANGALORE-560 042.
Tel: 567132

AUDITORS' REPORT

1. We have examined the attached Balance Sheet of the Mahila Samakhya-Karnataka as at 31st March, 1991 and the Income and Expenditure account for the year ended on that date and report that:

2. Further to above:

   a) We have obtained all the information and explanations which, to the best of our knowledge and belief, were necessary for the purposes of our audit.

   b) Proper books of account have been kept by the Society, so far as appears from our examination of books.

   c) The Balance Sheet and Income and Expenditure Account referred to in this Report are in agreement with the books of account.

   d) In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said accounts, subject to our comment given above, give a true and fair view:

      i. in the case of Balance Sheet, of the state of affairs of the Society as at 31st March, 1991 and,

      ii. in the case of the Income and Expenditure Account, of the excess Expenditure over Income for the year ended on that date.

Madhavan and Trinadh
MADHAVAN AND TRINADH
CHARTERED ACCOUNTANTS

BANGALORE
DATE :

MADHAVAN AND TRINADH
CHARTERED ACCOUNTANTS

32/1, 1ST FLOOR, 3RD CROSS,
AGA ABBAS ALI ROAD,
BANGALORE-560 042.
Tel.: 567132

MAHILA SAMAKHYA-KARNATAKA

NOTES:

1. a) Previous period's figures are not comparable with those of the current year as the previous period's figures are from 4th February, 1989 to 31st March, 1990.

   b) Previous period's figures have been recast and regrouped wherever necessary to make them comparable with those of the current year.

2. Depreciation on fixed assets has been calculated and provided in the accounts at the rates specified under the Incomatax Act.

3. The Society maintains its accounts on mercantile basis.